

खंड 3
मनोगतिक उपागम

Pignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY



ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 6 मनोविश्लेषण*

संरचना

- 6.0 प्रस्तावना
- 6.1 मनोविश्लेषण पर प्रभाव
 - 6.1.1 अचेतन मन का सिद्धान्त
 - 6.1.2 मनोविकृति का अभिप्राय
 - 6.1.3 सम्मोहन का उपयोग
 - 6.1.4 चार्ल्स डार्विन
 - 6.1.5 उन्नीसवीं शताब्दी के बाद वियना लैंगिकता के प्रति मनोवृत्ति
 - 6.1.6 विरेचन की अवधारणा
 - 6.1.7 स्वप्न के बारे में विचार
- 6.2 मनोविश्लेषण का विकास
 - 6.2.1 विरेचन की स्वीकृति एवं सम्मोहन का अस्वीकारना
 - 6.2.2 स्वतंत्र साहचर्य
 - 6.2.3 मनोविश्लेषण की प्रथम पुस्तक एवं ब्रुअर से अलगाव
 - 6.2.4 आत्म-विश्लेषण एवं स्वप्नों की व्याख्या
 - 6.2.5 पहचान एवं मतभेद
- 6.3 मनोविश्लेषण उपचार की एवं विधि के रूप में
 - 6.3.1 स्वतंत्र साहचर्य
 - 6.3.2 स्वप्न विश्लेषण
- 6.4 फ्रायड के शोध की विधि
- 6.5 व्यक्तित्व के एक प्रणाली के रूप में मनोविश्लेषण
 - 6.5.1 मूल प्रवृत्तियाँ
 - 6.5.2 व्यक्तित्व का चेतन एवं अचेतन पक्ष
 - 6.5.3 चिन्ता
 - 6.5.4 रक्षा युक्तियाँ
 - 6.5.5 मनोलैंगिक अवस्थाएँ
- 6.6 आलोचनाएँ
 - 6.6.1 आँकड़ा संकलन की विधि
 - 6.6.2 प्रकाशित केस हिस्ट्री
 - 6.6.3 फ्रायड का आँकड़ा
 - 6.6.4 मानव स्वभाव के प्रति धारणाएँ
 - 6.6.5 महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण
 - 6.6.6 उपचार की विधि

*डॉ. सैफ आर. फारूकी, सहायक प्राध्यापक, अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान विभाग, विवेकानन्द कॉलेज, नई दिल्ली

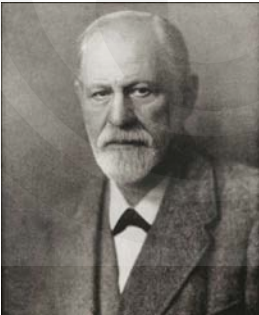
- 6.7 संपूर्ण प्रभाव
- 6.8 सारांश
- 6.9 मुख्य शब्द
- 6.10 पुनरावलोकन प्रश्न
- 6.11 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव
- 6.12 चित्रों के संदर्भ
- 6.13 ऑनलाइन संसाधन

सीखने का उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात्, आप इस योग्य होंगे :

- मनोविश्लेषण पर पढ़ने वाले विभिन्न प्रभावों की विवेचना करने में;
- मनोविश्लेषण के विकास की व्याख्या करने में;
- फ्रायड द्वारा दिये गये उपचार के विधि का वर्णन करने में;
- फ्रायड के व्यक्तित्व प्रणाली का वर्णन करने में; और
- मनोविश्लेषण के संपूर्ण प्रभाव की व्याख्या करने में।

6.0 प्रस्तावना



चित्र 6.1 : सिगमंड फ्रायड(1856–1939)
स्रोत :

www.livescience.com

बॉक्स 6.0 : सिगमंडफ्रायड

मनोविश्लेषण के संस्थापक सिगमंडफ्रायड जिन्होंने व्यक्तित्व के प्रथम व्यापक सिद्धांत को दिया। मनोविश्लेषण व्यवहार में अचेतन मन की भूमिका एवं मनोवैज्ञानिक विकृतियों के बारे में बतलाता है।

फ्रायड का जन्म 6 मई, 1856 में यहूदी परिवार में हुआ। उन्होंने अपना अधिकांश समय वियना में बिताया, जहाँ उन्होंने अपनी संपूर्ण शिक्षा एवं प्रशिक्षण पूरा किया, तथा *मनोविश्लेषण* का विकास किया। मनोविश्लेषण को धीरे-धीरे बढ़ती लोकप्रियता के कारण फ्रायड के विश्व व्यापी अनुयायी हो गये। नाजियों के बढ़ते प्रभाव के कारण फ्रायड वियना से चले गये। उनकी मृत्यु लंदन में 23 सितम्बर, 1939 को हुयी।

फ्रायड ने व्यक्ति, संस्कृति एवं समाज के सम्बन्ध में *मनोविश्लेषण* के प्रभाव के बारे में बहुत कुछ लिखा। उनके मुख्य कार्य है - (द इनटरप्रेटेशन ऑफ ड्रीमस, 1900), (साइकोपैथोलॉजी ऑफ एग्रीडे लाइफ, 1901), (थ्री एसै ऑन थ्योरी ऑफ सेक्सुएलिटी, 1905), (टोटैम एण्ड टैबू, 1913), (बिआन्ड प्लेश ऑफ प्रिंसिपल्स, 1920) एवं (सिवलिजेशन एण्ड इट्स डिस्कन्टेन्ट, 1931)।

मनोविश्लेषण का औपचारिक प्रारम्भ 1895 में हुआ, जिसने मनोविज्ञान के दूसरे विचारधाराओं के सम्प्रदाय को आच्छादित किया। प्रारम्भ में मनोविज्ञान एवं मनोविश्लेषण सेटिंग के प्रतिनिधि थोड़ा बहुत एक दूसरे के सम्पर्क में थे। आपसी मौलिक मतभेद के पश्चात् भी, विचारों के सम्प्रदाय में शैक्षणिक विरासत को सांझा किया एवं उसके प्रभाव से वुण्ट को अस्तित्व में लाया गया।

मनोविज्ञान के विज्ञान को शैक्षणिक एवं प्रयोगशाला सेटिंग में विकसित किया गया, जब कि मनोविश्लेषण का विकास नैदानिक सेटिंग में हुआ।

अपने प्रारम्भिक वर्षों में मनोविज्ञान का सम्बन्ध चेतना के तत्वों एवं प्रक्रियाओं की खोज से था। संवेदना, प्रत्यक्षीकरण स्मरण एवं विचार इसके रुचि के मुख्यविषय थे। जबकि दूसरी तरफ मनोविश्लेषण का मुख्य सम्बन्ध अचेतन से था। इसके रुचि का सम्बन्ध अभिप्रेरणा, संवेग, द्वंद, तंत्रिका लक्षणों, स्वप्न एवं चरित्र के शीलगुणों से था। इसके विपरीत क्षेत्रों की रुचि ने कुछ समय तक मनोविज्ञान एवं मनोविश्लेषण को एक दूसरे से अलग रखा। मनोविश्लेषण एवं मनोविज्ञान की भिन्नता सिगमंडफ्रायड (मनोविश्लेषण के जनक) एवं विलिहम वुण्ट (आधुनिक मनोविज्ञान के जनक) को परिप्रेक्ष्य के सामने आने के पश्चात् आया। वुण्ट ने अपने प्राकृतिक विज्ञान की चेतन अनुभव की सीमा में रखा, जबकि फ्रायड ने इसकी तरफ अपनी संवेदनात्मकता दिखायी, उनके इस परिप्रेक्ष्य को 'मेरा मनोविज्ञान' कहा गया। फ्रायड की रुचि बहुत अधिक चेतन मन के विषय-वस्तु की तरफ थी। जबकि उन्होंने वैज्ञानिक नियमावली के दृष्टिकोण पर बल दिया, वुण्ट की भांति यह भौतिकी के मॉडल पर आधारित नहीं था, बल्कि यह जीव विज्ञान के समानान्तर था।

मनोविश्लेषण में प्रयुक्त खोज की विधियाँ मनोविज्ञान में उपलब्ध विधियों से भिन्न थी। मनोविज्ञान की जड़ें उन्नीसवीं शताब्दी की तीन विधियों - प्रयोगशाला अध्ययन, नैदानिक प्रयोग एवं मनोवैज्ञानिक निरीक्षण से भिन्न थी। मनोविश्लेषण के लिए उन्नीसवीं शताब्दी के चिकित्सा मॉडल को नैदानिक साक्षात्कार शोध की मुख्य विधि थी।

वुण्ट एवं टिचनर ने अपनी प्रणाली में अचेतन को स्वीकार नहीं किया क्योंकि उनका विश्वास था कि अचेतन का अन्तर्निरीक्षण करना ही समाधान है। क्योंकि अचेतन का अन्तर्निरीक्षण नहीं किया जा सकता इसलिए इसको इसके प्रारम्भिक तत्वों में कम नहीं किया जाता है। प्रकार्यवादियों का भी पूरा ध्यान चेतन पर था, उनके लिए भी अचेतन का कोई उपयोग नहीं था।

मनोविज्ञान की प्रारम्भिक पुस्तकों में अचेतन का जिक्र मुश्किल से होता था। उनके लिए इसका विचार बाद में आता था। अपनी व्यवहारात्मक प्रणाली में वाटसन ने अचेतन की अपेक्षा चेतन को विशेष महत्व दिया। उन्होंने बताया कि व्यक्ति अचेतन को कभी याद नहीं करता।

वर्षों पश्चात् धीरे-धीरे मनोविज्ञान एवं मनोविश्लेषण के मध्य की दूरी ईगो मनोविज्ञान एवं वस्तु सम्बन्ध सिद्धान्तों के प्रारम्भ होने से कम हो गयी। दूसरे विश्व युद्ध के पश्चात् इनके बीच की दूरी तेजी से कम हो गयी।

6.1 मनोविश्लेषण पर प्रभाव

6.1.1 अचेतन मन का सिद्धान्त

1) गाटफ्रीड विलहेल्म लाइबनिज

अठारहवीं शताब्दी के पूर्व जर्मन दार्शनिक एवं गणितज्ञ लिबनिज ने एक विचार विकसित किया जो *मोनाडोलॉजी चिदणुशास्त्र* कहलाता है। मोनाड, जिसे लिबनिज

व्यक्ति के सत्य के तत्व के रूप में मानते थे, जो शारीरिक अणु नहीं थे। जो संपूर्ण रूप से भौतिक तत्व से नहीं बने थे। प्रत्येक मोनाड मानसिक तत्व का बिना बढ़ा हुआ रूप है। जब बहुत से मोनाड एक समूह में एकत्रित हो जाते हैं, तब वे एक विस्तार को जन्म देते हैं। मोनाड को प्रत्यक्षीकरण के रूप में पसंद किया जा सकता है। लिबनिज का मानना है कि मानसिक घटनाओं (मोनाड की क्रियाशीलता) में चेतना के विभिन्न डिग्री होते हैं, जो अचेतन से स्पष्ट चेतन के मध्य फैले होते हैं। चेतना का कम स्तर *सूक्ष्म प्रत्यक्ष* (Petites perceptions) कहलाता है, चेतन की यह अनुभूति आत्म-बोध कहलाती है।

2) जोहान फ्रेडरिक हर्बट

एक शताब्दी पश्चात् जर्मन दार्शनिक एवं शिक्षाविद् फ्रेडरिक हर्बट ने लिबनिज के अचेतन के दृष्टिकोण को *चेतन के देहलीज* के प्रत्यय के रूप में विकसित किया। हर्बट के अनुसार देहलीज से नीचे का विचार अचेतन होता है। जब भी कोई विचार चेतन स्तर के जागरूकता के प्रति बढ़ता है उसे आत्मसात किया जाता है (यह शब्द लिबनिज द्वारा दिया गया) चेतन स्तर से बढ़ते विचार के लिए पहले से चेतना के विचार की संगति की आवश्यकता होती है। उसी समय चेतना के आसामंजस्य का विचार अस्तित्व में नहीं हो सकता, तथा अनावश्यक विचार जबरदस्ती चेतना से बाहर हो जाते हैं, जो अवरोधित विचार होते हैं। अवरोधित विचार चेतना के देहलीज के नीचे स्थित होते हैं, जो *लिबनिज के सूक्ष्म प्रत्यक्ष* के समान होते हैं।

3) गुस्टाव थ्योडोरफेकनर

फेकनर ने भी अचेतन सिद्धान्त के विकास सहयोग किया। यद्यपि उन्होंने भी देहलीज के सिद्धान्त का प्रयोग किया, यह उनका ही सुझाव था कि मस्तिष्क आइसबर्ग (बर्फ के टुकड़े) के समान है, जिसका प्रभाव फ्रायड पर बहुत अधिक पड़ा। फेकनर का मानना था कि आइसबर्ग के बड़े भाग के समान मस्तिष्क का अधिकांश भाग सतह के नीचे होता है, जहाँ यह अनिशिक्षित शक्तियों से प्रभावित होता है। फ्रायड ने फेकनर की पुस्तक *एलिमेंट्स ऑफ साइकोफिजिक्स* में अपने बहुत कुछ कहा। कुछ मुख्य तत्वों को फेकनर के कार्य से निकाला – खुशी का सिद्धान्त, मनोऊर्जा, एवं क्रोध का महत्व आदि।

4) यूरोप में 1880 का बौद्धिक वातावरण

अचेतन का विचार यूरोप में 1880 के बौद्धिक वातावरण का भाग था, यह वह समय था जब फ्रायड अपनी नैदानिक अभ्यास की शुरुआत कर रहे थे। यह केवल व्यावसायिक के रुचि का मुद्दा नहीं था, बल्कि यह लोगों के बीच बातचीत का एक विषय था। *फिलासफी ऑफ अन्कान्शस* (हार्टमन्न्, 1869) पुस्तक इतनी लोकप्रिय हुई की 1869 से 1882 के मध्य इसका नौवां संस्करण प्रकाशित हुआ। 1870 में जर्मनी में लगभग आधा दर्जन दूसरी पुस्तकें प्रकाशित हुयी जिनका शीर्षक *अचेतन* था। अतः फ्रायड, मानव अचेतन को खोजने अथवा इसका वर्णन करने वाले प्रथम व्यक्ति नहीं थे। उनसे पहले दार्शनिकों ने इसको बहुत अच्छे से स्वीकार कर लिया था। जो इन्होंने खोजा एवं जो दावा किया वह अध्ययन का एक रास्ता था।

6.1.2 मनोविकृति का अभिप्राय

उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान मनोचिकित्सा में विचारों के दो प्रमुख सम्प्रदाय थे, दैहिक एवं मानसिक। दैहिक सम्प्रदाय का मानना था कि असामान्य व्यवहार शारीरिक कारणों जैसे मस्तिष्कीय चोट, उत्तेजित स्नायु अथवा स्नायुओं के बहुत अधिक तनाव से होते हैं। मानसिक सम्प्रदाय असामान्य व्यवहार की व्याख्या मानसिक अथवा मनोवैज्ञानिक आधार पर करते हैं। सामान्यतः दैहिक दृष्टिकोण अधिक प्रभावशाली था।

मनोविश्लेषण का विकास दैहिक स्थिति निर्धारण के विद्रोह के रूप में हुआ। जैसे-जैसे इलाज होने वाला व्यक्ति ठीक होता है। उन्नति करता, कुछ वैज्ञानिक इस बात से सहमत हो गये मानसिक चोट अथवा अन्य प्रभावशाली कारकों के अतिरिक्त संवेगात्मक कारक अधिक महत्वपूर्ण थे।

6.1.3 सम्मोहन का उपयोग

1) जीन मार्टिन शार्कोट

अठारह सौ के मध्य में फ्रेंच चिकित्सक जीन मार्टिन शार्कोट के कार्य के कारण सम्मोहन की व्यावसायिक स्वीकारोक्ति हुयी। शार्को ने उन्मादी मरीजों का सम्मोहन के द्वारा सफलतापूर्वक इलाज किया। विशेष रूप से उन्होंने उन्माद के लक्षणों का वर्णन किया तथा सम्मोहन को मेडिकल शब्दावली में प्रयुक्त किया, जिससे वह दूसरे चिकित्सकों के मध्य अधिक स्वीकार हो सके। प्रारम्भ में चरकट का कार्य तंत्रिका से सम्बन्धित था, जिसमें शारीरिक क्षुब्धता पर विशेष बल दिया जाता था जैसे पैरालेसिस के लक्षण।

शार्कोट ने उन्माद के रोगियों पर सम्मोहन का बहुत अधिक उपयोग किया। उन्होंने छात्रों एवं अन्य समूहों के रोगियों को सम्मोहित किया। इसकी वजह से उन्हें 'तंत्रिका के नेपालियन' नाम से जाना जाने लगा। फ्रायड थोड़े दिन के लिए शार्कोट के छात्र थे, तथा विकृतियों के उपचार के लिए सम्मोहन विधि के उपयोग से बहुत अधिक प्रभावित थे। उन्होंने सम्मोहन को विकृतियों के उपचार की विधि के रूप में प्रारम्भ किया।

2) पियरे जेनेट

जेनेट शार्कोट के छात्र थे, जिन्होंने शार्कोट के इस दृष्टिकोण की उन्माद एक शारीरिक समस्या है, एवं इसको मानसिक विकृति के रूप में पहचानने को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने मानसिक तथ्यों विशेष रूप से स्मृति की कमी, निश्चित विचार एवं अचेतन शक्तियों को कारण के रूप में माना, एवं उन्होंने सम्मोहन को एक उपचार की विधि के रूप में चुना। जेनेट के कार्यों ने फ्रायड के बहुत से विचारों को पूर्वानुमानित किया।

6.1.4 चार्ल्स डार्विन

डार्विन ही एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने फ्रायड एवं उनके मनोविश्लेषण के लिए मार्ग प्रशस्त किया। डार्विन ने बहुत से ऐसे विचारों की विवेचना की जो बाद में फ्रायड के मनोविश्लेषण केन्द्रीय तथ्य बन गया - जिसमें अचेतन मस्तिष्क की प्रक्रियाएँ द्वंद, स्वप्न का महत्व, कुछ व्यवहारिक लक्षणों के छिपे हुए लक्षणों का समूह एवं लैंगिक

उत्तेजना का महत्व सम्मिलित था। फ्रायड के बच्चों के संपूर्ण विकास के विचारों पर डार्विन के सिद्धान्तों का प्रभाव दिखलाई पड़ता है। डार्विन ने व्यवहार एवं विचारों के अतार्किक पक्ष पर फोकस किया, जिसे फ्रायड ने बाद में किया।

6.1.5 उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में वियना में लैंगिकता के प्रति मनोवृत्ति

वियना के लोगों के प्रतिदिन के जीवन में लैंगिकता के प्रति दिखलायी पड़ती थी, साथ ही साथ वैज्ञानिक साहित्य में भी दिखलायी पड़ी थी। फ्रायड के लैंगिक आधारित सिद्धान्त के आने से पूर्व के वर्षों में ही, लैंगिक विकृतियों के बहुत से अध्ययन प्रकाशित हो चुके थे, शैशवास्था लैंगिकता, एवं लैंगिक आवेगों का दमन एवं मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य पर उसका प्रभाव। *लिबिडो* शब्द जिसका फ्रायड के मनोविश्लेषण में विशेष महत्व था, वह पहले से प्रयोग में था तथा उसका वही अर्थ था जिसके बाद में फ्रायड ने महत्व दिया अतः फ्रायड के कार्यों के अधिकांश लैंगिक तत्वों का एक अथवा दूसरे रूप में पूर्वानुमान लगा लिया गया था। क्योंकि सामान्य एवं व्यावसायिक लोग पहले से बहुत अधिक समझने वाले थे, फ्रायड के विचारों न अधिक ध्यान प्राप्त किया।

6.1.6 विरेचन की अवधारणा

विरेचन जटिल संवेगों को समाप्त करने अथवा कम करने की प्रक्रिया है जिसे चेतन अवस्था में आने की अनुमति देकर अभिव्यक्त किया जाता है। विरेचन का प्रत्यय फ्रायड के किसी कार्य में प्रकाशित होने से पूर्व ही लोकप्रिय था। 1890 तक विरेचन के 140 से अधिक प्रकाशन जर्मन में थे।

6.1.7 स्वप्न के बारे में विचार

सत्रहवीं शताब्दी के बाद के दर्शन एवं दैहिक साहित्य में स्वप्न के सम्बन्ध में फ्रायड के बहुत से विचारों का पूर्वानुमान किया गया था। फ्रायड के तीन समकालीन पहले से ही स्वप्न पर अध्ययन कर रहे थे। शार्कोट का कहना था कि उन्माद से सम्बन्धित मनोवैज्ञानिक आघात रोगी के स्वप्न में दिखलायी पड़ता है। जेनेट का यह विश्वास था कि स्वप्न में उन्माद के कारण निहित होते हैं, तथा उन्होंने स्वप्न को उपचार के एक साधन के रूप में उपयोग किया। क्राफ्ट एबिंग का तर्क था कि अचेतन की लैंगिक इच्छाएँ स्वप्न में पायी जाती हैं।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 1

- 1) अचेतन के विचार की विवेचना कीजिए, जो मनोविश्लेषण के आने से पहले अस्तित्व में थी।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) डार्विन ने फ्रायड को कैसे प्रभावित किया?

.....

.....

.....

.....

6.2 मनोविश्लेषण का विकास

एक मेडिकल डाक्टर के रूप में अपने करियर के प्रारम्भ में फ्रायड ने यह अनुभव किया उनके तंत्रिका/स्नायु विकृति के लक्षण के रोगियों में आंगिक विकृति नहीं थी। बल्कि उनके लक्षण अधिक संवेगात्मक द्वंद के कारण उत्पन्न हो रहे थे। (जिसे उस समय उन्माद के नाम से जाना जाता था, जिसे रूपान्तरण प्रकार के कामिक विकृति के बारे में जाना जाता था)। इसने मनोचिकित्सा में फ्रायड की रुचि को आगे बढ़ाया। 1885 में फ्रायड ने प्रसिद्ध मनोचिकित्सक जीन चरकट के निर्देशन में अध्ययन किया, जो उन्माद के उपचार के लिए सम्मोहन के उपयोग का प्रारम्भ किया, पर इसको बहुत अधिक प्रभावशाली नहीं पाया।

इसी बीच फ्रायड चिकित्सक जोसेफ ब्रूअर से मिले और उनसे मित्रता की। फ्रायड ने ब्रूअर को अपने सलाहकार के रूप में पाया। ब्रूअर अपने मरीजों के सम्बन्ध में फ्रायड से विचार-विमर्श करते, जिसमें अन्ना ओ भी सम्मिलित थे (वास्तविक नाम बर्था पैपेनहीम)। मनोविश्लेषण के विकास में यह केस केन्द्र बिन्दु रहा।

6.2.1 विरेचन की स्वीकारोक्ति एवं सम्मोहन को अस्वीकारना

मनोविश्लेषण के विकास में ब्रूअर की अन्ना ओ. के सम्बन्ध में रिपोर्ट महत्वपूर्ण है, क्योंकि इन्होंने फ्रायड के विरेचन विधि अथवा *बातचीत उपचार विधि* जो विकसित किया। आगे चलकर उनके काम की यह विधि बहुत प्रमुख विधि हो गयी। ब्रूअर ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने विरेचन विधि का उपयोग किया। विरेचन में रोगी को जो कुछ भी उसके मस्तिष्क में आता है उसे बोलने के लिए प्रेरित किया जाता है, वह चाहे जितना उसके लिए तकलीफ देने वाला अथवा परेशान करने वाला हो।

फ्रायड ने धीरे-धीरे ब्रूअर के विरेचन विधि को अपनाया तथा सम्मोहन को नकार दिया। फ्रायड ने सम्मोहन के उपचार के विशेष रूप से तीन कारणों से नकारा :

- 1) हर कोई सम्मोहित नहीं हो सकता।
- 2) कुछ मरीज सम्मोहन की अवस्था में जो कहते हैं उस पर विश्वास करने से मना कर देते हैं।
- 3) सम्मोहन के सुझावयाहिता में जब एक लक्षण बढ़ता है, उस समय प्रायः नया लक्षण आ जाता है।

6.2.2 स्वतंत्र साहचर्य

विरेचन विधि द्वारा फ्रायड ने *स्वतंत्रता साहचर्य* की विधि विकसित की। स्वतंत्र साहचर्य में रोगी को एक काउच पर लिटाकर उसे खुले तरीके से तथा लगातार बात करने के

लिए प्रेरित किया जाता है, उसे संपूर्ण विचारों की पूर्णतः व्यक्त करना होता है, वह चाहे कितना अमहत्वपूर्ण एवं परेशान करने वाला अथवा बेवकूफी वाला हो। फ्रायड के मनोविश्लेषण प्रणाली का उद्देश्य व्यक्ति की दमित स्मृतियों अथवा विचारों को चेतना में लाकर जागरूक करना था, जिसे रोगी के असामान्य व्यवहार का स्रोत माना जाता था।

फ्रायड का यह विश्वास था कि स्वतंत्र साहचर्य के दौरान जो कुछ भी बताया गया उसमें कुछ भी यादृच्छिक नहीं है और न ही रोगी के चेतन विकल्प के द्वारा उसे सेन्सर किया गया। स्वतंत्र साहचर्य के दौरान हुए अनुभवों की पुनः गिनती पूर्वानुमानित होती है। यह मरीज के चेतन में अनुचित रूप से घुस जाता है जिसकी वजह से मरीज इसे चिकित्सक के समझ बतलाता है। स्वतंत्रता साहचर्य तकनीकी द्वारा फ्रायड ने यह पाया कि उनके मरीजों की स्मृतियों उनके बचपन अवस्था तक पहुंच जाती थी, तथा बहुत सी दमित स्मृतियों के अनुभव जिन्हें के पुनः स्मृति करने वे लैंगिक तथ्यों से सम्बन्धित होते थे। अपने मरीजों की बीमारी के लिए संभावित लैंगिक कारणों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होने के कारण फ्रायड ने अपने मरीजों के बातचीत में लैंगिक कारणों पर अधिक ध्यान दिया।

6.2.3 मनोविश्लेषण की प्रथम पुस्तक एवं ब्रुअर से अलगाव

फ्रायड एवं ब्रुअर ने *स्टड्स ऑफ हिस्टीरिया* पुस्तक एक दूसरे के सहयोग से लिखी जो 1895 में प्रकाशित हुयी। यह पहली पुस्तक थी जो मनोविश्लेषण पर लिखी गयी, तथा इसी के साथ मनोविश्लेषण का औपचारिक प्रारम्भ हुआ। इस पुस्तक में बहुत से लेखकों के पेपर एवं बहुत से केस अध्ययन थे, जिसमें अन्ना ओ. का भी केस अध्ययन था। पूरे यूरोप के वैज्ञानिक एवं साहित्यिक जर्नल में पुस्तक की बहुत प्रशंसा हुयी तथा इस क्षेत्र में इसे एक मूल्यवान सहयोग माना गया।

इस पुस्तक के प्रकाशनार्थ ब्रुअर अनिश्चित थे। वह फ्रायड से तंत्रिकातापी व्यवहार के लिए लैंगिक कारणों को लेकर असहमत थे। उन्होंने फ्रायड को बताया कि उनके निष्कर्षों के आधार के लिए पूर्ण प्रमाण उपलब्ध नहीं है। इस पुस्तक को आगे बढ़ाने के निर्णय को लेकर दोनों के सम्बन्धों में दरार पड़ गयी। फ्रायड सही है इस बात से वह सहमत थे तथा अपनी स्थिति के सहयोग के सम्बन्ध में उनकी अतिरिक्त आँकड़ों की जमा करने की आवश्यकता नहीं थी। धीरे-धीरे फ्रायड एवं ब्रुअर अलग-अलग दिशाओं में बढ़ने लगे, जिसने दोनों के अलगाव को बढ़ाया।

6.2.4 आत्म-विश्लेषण तथा स्वप्न की व्याख्या

1887 में फ्रायड ने अपने स्वप्नों का आत्म-विश्लेषण प्रारम्भ किया। वह बहुत से स्नायुविकृति लक्षणों से पीड़ित थे तथा अपनी अवस्था को *चिन्ता स्नायुविकृति* के रूप में पहचाना। उन्होंने माइग्रेन सिरदर्द की रिपोर्ट की, तथा वह मरने के लिए, यात्रा के लिए, खुली जगह और हृदय रोग के बारे में चिंतित हो गए। यह उनके आन्तरिक विक्षोभ का समय था, यद्यपि की यह उनका एक सबसे अधिक रचनात्मक समय भी था।

उनके बहुत से स्नायुविकृति सिद्धान्त उनके अपने स्नायुविकृति कठिनाईयों एवं उनके विश्लेषण के द्वारा पाये गये। उन्होंने स्वयं को आत्म-विश्लेषण करके अपने मरीजों को समझने का प्रयास किया, जिस विधि को उन्होंने चुना वह *स्वप्न विश्लेषण* था, जिसमें

आत्म-विश्लेषण सम्मिलित था। अपने कार्य के दौरान फ्रायड ने यह पाया कि मरीजों के स्वप्न उनके संवेगात्मक सामग्रियों के एक महत्वपूर्ण स्रोत हो सकते हैं। स्वप्न में प्रायः क्षुब्धता के कारण निहित होते हैं। उनका यह विश्वास था कि प्रत्येक घटना का एक कारण है, उनका यह मानना था कि स्वप्न की घटनाएँ पूर्णतः अर्थहीन नहीं होती बल्कि वह मरीजों के अचेतन के कुछ परिणाम होते हैं।

उन्होंने यह अनुभव किया कि स्वतंत्र साहचर्य विधि से वह अपना विश्लेषण नहीं कर पाए—यह एक ही समय में मरीज एवं चिकित्सक के लिए कठिन था। इसलिए फ्रायड ने उसकी जगह स्वप्न को विश्लेषित करने का निश्चित किया। प्रत्येक सुबह उठने के पश्चात् वह अपनी रात के स्वप्न कहानी को लिखते तथा पुनः उसे विश्लेषित करते। यह आत्म-निरीक्षण दो वर्ष तक जारी रहा, जिसकी पराकाष्ठा इनटरप्रेटेशन ऑफ ड्रीम (1900) के प्रकाशन के रूप में हुयी, जिस पुस्तक को आज फ्रायड के मुख्य कार्य के रूप में माना जाता है। प्रथम बार इसमें उन्होंने *ओडिपॉस कॉम्प्लेक्स* के बारे में बताया, जिसमें उन्होंने अपने बचपन के अनुभवों को वृहद रूप से दिया।

प्रारम्भ में इसको अच्छी तरह स्वीकार नहीं किया गया, किन्तु आगे चलकर यह मनोविज्ञान की बहुत प्रचलित पुस्तक हो गयी। ज्यूरिक स्विट्जरलैंड में कार्ल युंग नाम के नौजवान व्यक्ति ने इस पुस्तक को पढ़ा तथा शीघ्र ही एक नये मनोविश्लेषण को परिवर्तित किया स्वप्नों की व्याख्या इतना सफल हुआ कि फ्रायड के जीवनकाल में इसका आठवां संस्करण सामने आया। मनोविश्लेषण के लिए *स्वप्न विश्लेषण* को एक मानव तकनीकी के रूप में स्वीकार किया, तथा इसके पश्चात् प्रत्येक दिन अन्तिम आधा घंटा आत्म-विश्लेषण के लिए दिया।

6.2.5 पहचान एवं मतभेद

वर्ष 1900 के पश्चात् फ्रायड ने अपने विचारों को विकसित किया और बढ़ाया। 1901 में उन्होंने द साइकोपथलाजी ऑफ एग्रीडे लाइफ पुस्तक प्रकाशित की। इस पुस्तक में उन्होंने मनोविश्लेषण को सभी लोगों के लिए सामान्यीकृत किया न कि केवल मनोवैज्ञानिक विकार से ग्रसित लोगों के लिए। यही पुस्तक थी जहाँ फ्रायड के सिद्धान्त ने एक आकार लेना प्रारम्भ किया। इस पुस्तक में प्रसिद्ध '*फ्रायडियन स्लिप*' का वर्णन था। फ्रायड का सुझाव था कि प्रतिदिन के व्यवहार में, अचेतन के जो विचार प्रकट होने के लिए जूझते हैं उन विचारों एवं क्रियाओं को परिभार्जित किया जा सकता है। सामान्य रूप से जबान का स्लिप होना अथवा भूलने की क्रिया वास्तव में वास्तविकता का प्रतिबिम्ब है, यद्यपि कि इसे स्वीकार नहीं किया जाता है। इस समय (1902) फ्रायड की लोकप्रियता बढ़ गयी। वो अपने शिष्यों के साथ साप्ताहिक मनोविश्लेषण पर विवेचन करने लगे (वियना मनोविश्लेषक सोसायटी)। ये शिष्य एडलर एवं युग थे, एडलर उनके प्रथम समर्थक थे।

क्लार्क विश्वविद्यालय के 20वीं शताब्दी समारोह मनाने के लिए ग्रानविले स्टेनली हॉल में फ्रायड को अमरीका में आमंत्रित किया। 1887 में स्टेनली हॉल ने अमेरिकन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी की शुरुआत की। मनोविज्ञान का पहला अंग्रेजी भाषा का जर्नल तथा 1892 में अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन का गठन किया, वे इसके प्रथम अध्यक्ष बने। अमेरिका के इस भ्रमण ने फ्रायड को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दी। अमेरिका में फ्रायड के व्याख्यानों की बहुत प्रशंसा हुई। वे अमेरिका के बहुत से प्रसिद्ध

मनोवैज्ञानिक जैसे – विलियम जेम्स, जेम्स मैककिन कैटेल और एडवर्ड टिचनर से मिले।



चित्र 6.2 : फ्रायड का अमेरिका भ्रमण (1909)

स्रोत : <http://www2.clarku.edu/departments/psychology/pdfs/ClarkUinAGP.pdf>

बॉक्स 6.1 : फ्रायड का अमरीका भ्रमण

सितम्बर, 1909 में सिगमंडफ्रायड को क्लार्क विश्वविद्यालय में मनोविश्लेषण पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया। उस भ्रमण के दौरान एक फोटोग्राफ (चित्र 6.2) ली गयी, जिसको कि मनोविज्ञान के इतिहास में एक महान फोटो माना जाता है। इस फोटो में प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जैसे सिगमंड, कार्ल युंग, ग्रेनविले स्टैनले हॉल, फ्रेन्ज बोस, एडोलफ, मेयर विलियम, जेम्स, एडवर्ड टिचनर, जेम्स मेक्कीन कैटेल, विलियम स्टर्न एवं जोसेफ जैस्दो सब एक साथ देखे जा सकते हैं।

फ्रायड का भाषण अमेरिकन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी में प्रकाशित हुआ एवं उसका अनुवाद विभिन्न भाषाओं में किया गया। अमेरिकन साइकोलाजिकल एसोसिएशन की वार्षिक बैठक में तीन घंटे का सत्र मनोविश्लेषण पर दिया गया। इससे यह प्रदर्शित होता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में मनोविश्लेषण का विशेष प्रभाव था एवं पुनः फ्रायड की लोकप्रियता बढ़ गयी। यह भ्रमण मनोविश्लेषण के लिए एक मील का पत्थर साबित हुआ। इसने फ्रायड को विश्वव्यापी लोकप्रियता एवं अन्तर्राष्ट्रीय पहचान दी। इसने मनोचिकित्सा एवं नैदानिक मनोविज्ञान के विकास का आगे बढ़ाया।

इस दौरान फ्रायड अपने विचारों के प्रति बहुत अधिक दृढ़ हो गये थे। अपने मनोविश्लेषण में वे किसी प्रकार की असहमति अथवा परिमार्जन बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। अपने सिद्धान्त में लैंगिकता के सिद्धांत की भूमिका के असहमति को भी उन्होंने बर्दाश्त नहीं किया।

जो कोई भी इसे स्वीकार नहीं करता या इसमें बदलाव के बारे में सोचता उसकी बहुत अधिक आलोचना होती थी।

फ्रायड की बढ़ती हुयी लोकप्रियता के कारण उनके स्वयं के अपने अनुयायी विरोध एवं आलोचना करने लगे। एडलर फ्रायड द्वारा लैंगिकता पर दिये गये प्रभाव से असहमत थे, तथा उसकी लोगों की बीच आलोचना प्रारम्भ कर दी। 1911 में वे फ्रायड से अलग

हो गये तथा अपना अलग समूह बनाया तथा उनका उपागम *इन्डिविजुअल साइकोलॉजी* नाम से जाना गया। युंग एवं फ्रायड के मध्य भी असहमति हुयी। युंग उनकी लैंगिकता के प्रति बाध्यता से असहमत थे, तथा फ्रायड, युंग के आध्यात्मिकता के प्रभाव से असहमत थे। इसकी वजह से 1914 में युंग,फ्रायड से अलग हो गये। युंग ने मनोविश्लेषण के अपने संस्कारण (वर्सन) को बनाया जिसे *एनालिटिकल साइकोलॉजी* का नाम दिया।

1914 के अन्त तक मनोविश्लेषण के तीन विभिन्न संस्करण थे।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 2

1) फ्रायड के अमरीका भ्रमण का क्या महत्व है?

.....

.....

.....

2) मनोविश्लेषण के विकास में फ्रायड के आत्म-विश्लेषण की क्या भूमिका है?

.....

.....

.....

3) मनोविश्लेषण पर पहली पुस्तक का नाम बनाइए।

.....

.....

.....

6.3 मनोविश्लेषण एक उपचार विधि के रूप में

6.3.1 स्वतंत्र साहचर्य

फ्रायड ने यह पाया कि स्वतंत्र साहचर्य विधि का प्रयोग हमेशा स्वतंत्रता से नहीं किया जा सकता। आगे अथवा पीछे चलकर उनके मरीज इस चरम बिन्दु पर पहुंच जाते हैं, जहाँ वे अपने एकत्रित भाव को बताना नहीं चाहते अथवा बताने में असमर्थ होते थे।

6.3.1.1 प्रतिरोध

स्वतंत्र साहचर्य में प्रतिरोध एक ऐसी बाधा होती है, जहाँ मरीज अपनी दुखद स्मृतियों को बताने से मना कर देता है। फ्रायड का विश्वास था कि ये *प्रतिरोध* यह प्रदर्शित करते हैं कि रोगी अपने चेतन स्मरण में आ गया है, जिसका सामना करना उसके लिए शर्मनाक है। फ्रायड का मानना था कि प्रतिरोध संवेगात्मक दर्द से बचाव का एक

स्वरूप है। दर्द की उपस्थिति यह इंगित करती है कि यह विश्लेषण समस्या के स्रोतों के निकट है और विश्लेषक को अपनी छानबीन इसी दिशा में बढ़ानी चाहिए।

6.3.1.2 दमन

फ्रायड की प्रतिरोध की खोज ने उन्हें *दमन* के मौलिक सूत्र के सिद्धांत बनाने के लिए बाध्य किया, जो अस्वीकृत विचारों की स्मृति एवं इच्छाओं को चेतन की जागरूकता से निकालने की प्रक्रिया का वर्णन करती है। प्रतिरोध से संभावित व्याख्या के प्राप्त होने को फ्रायड प्रतिरोध का कारण मानते थे। असुखद विचार अथवा आवेग को चेतन से जबरदस्ती बाहर धकेला जाना था। चिकित्सक मरीज की इन दमित सामग्रियों को चेतन में लाने में सहायता करता है, जिससे वे इससे लड़ सकें तथा उसका सामना करना सीख सकें।

6.3.1.3 अन्तरण

अन्तरण ऐसी प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत रोगी चिकित्सक को इस प्रकार जवाब देता है जैसे कि चिकित्सक मरीज के जीवन में एक बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति है जैसे कि उसका एक पार्टनर। फ्रायड ने यह पाया कि एक स्नायुविकृति रोगी को प्रभावशाली उपचार तभी सम्भव है जब दोनों (चिकित्सक एवं रोगी) के मध्य एक व्यक्तिगत घनिष्ठ सम्बन्ध विकसित हो। फ्रायड के अनुसार, अन्तरण उपचार प्रक्रिया का एक अनावश्यक भाग है। इस उपचार का एक लक्ष्य यह था कि रोगियों को चिकित्सक पर से बचपने की आश्रितता से हटाकर उनमें वयस्क की भूमिका का पूर्वानुमान करने का प्रयास करे।

6.3.2 स्वप्न विश्लेषण

फ्रायड के मनोविश्लेषण की एक दूसरी महत्वपूर्ण उपचार विधि *स्वप्न विश्लेषण* है। फ्रायड का विश्वास था कि स्वप्न दमित इच्छाओं का एक प्रच्छन्न सन्तुष्टि का बहाना है, और स्वप्न *इच्छाओं की पूर्ति* का एक बहाना है। स्वप्न में प्रकट एवं अप्रकट दोनों ही प्रकार की सहमति होती है। पुनरावृत्ति के दौरान बतायी गयी कहानी में *प्रकटविषय वस्तु वास्तविक* कहानी होती है जो स्वप्न में घटित हुयी होती है, जो स्वप्न का छिपा हुआ अथवा प्रतीकात्मक का अर्थ होता है।

फ्रायड का मानना था कि जब रोगी अपने स्वप्न को वर्णित करता है तो केवल उसकी दमित इच्छाएँ (अप्रकट सहमति) प्रतीकों के स्वरूप में प्रकट होती हैं। यद्यपि अधिकांश स्वप्न प्रतीक उनके लिए सही होता है जो उसे प्रस्तुत करते हैं, जबकि दूसरे प्रतीक बाकी सबके लिए समान होते हैं।

6.4 फ्रायड के शोध की विधि

मनोविश्लेषण को उपचार की एक विधि के रूप में विकसित होने के पश्चात् भी फ्रायड की इच्छा मानव व्यवहार की गत्यात्मकता की व्याख्या करना था। उन्होंने अपने को चिकित्सक की अपेक्षा एक वैज्ञानिक के रूप में अधिक पहचाना एवं स्वतंत्र साहचर्य एक स्वप्न विश्लेषण को अपने शोध अध्ययन के लिए आँकड़े के संकलन की तकनीकी के रूप में देखा।

यह तकनीकियाँ फ्रायड के लिए उपचार के प्रयोग के लिए थी, दूसरी उसका वैज्ञानिक प्रयोग था। फ्रायड का लगाव शोध के प्रति था, जिसके आधार पर उन्होंने मानव व्यक्तित्व की क्रियाओं की व्याख्या के लिए एक सिद्धांत बनाया।

फ्रायड की प्रणाली विधि एवं सहमति के दृष्टिकोण से असमय के पारम्परिक प्रयोगात्मक मनोवैज्ञानिकों के शोध विधि से भिन्न थी। वह नियंत्रित प्रयोगों के द्वारा आँकड़ा एकत्र नहीं कर सके अथवा अपने परिणामों के विश्लेषण में सांख्यिकीय का प्रयोग किया। प्रयोगात्मक उपागम पर उनका थोड़ा विश्वास था, फिर भी उनका विश्वास था कि उनका शोध वैज्ञानिक था, जो उनके रोगी का केस हिस्ट्री तथा उनका आत्म-विश्लेषण था, जो उनके निष्कर्ष को थोड़ा सहयोग देते थे।

फ्रायड ने अपने विचारों को साक्ष्य के संदर्भ में तैयार, संशोधित ओर विस्तारित किया और स्वयं ही उसकी व्याख्या की। उनके सिद्धान्तों के निर्माण में उनकी आलोचनात्मक योग्यता उनके महत्वपूर्ण पथ-प्रदर्शक थी। उन्होंने केवल मनोविश्लेषक होने उनकी विधियों का प्रयोग किया है वे ही उनके कार्य के वैज्ञानिक महत्व के साथ-साथ कर सकते हैं, उन्होंने दूसरों की आलोचनाओं पर ध्यान नहीं दिया विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो मनोविश्लेषण के प्रति संवेदनशील नहीं थे। उन्होंने शायद ही किसी आलोचना का जवाब दिया। उनका मानना था कि मनोविश्लेषण उनकी प्रणाली और उनका अकेलापन था।

6.5 व्यक्तित्व की प्रणाली के रूप में मनोविश्लेषण

6.5.1 मूलप्रवृत्तियाँ

मूलप्रवृत्तियाँ व्यक्तित्व को प्रेरित करने वाली शक्तियाँ हैं; जैविकीय शक्तियाँ (जैसे भूख) जो मानसिक ऊर्जा को छोड़ती है, वो व्यक्ति को कुछ निश्चित कार्य करने के लिए उद्बोधित करती है। फ्रायड ने इसके लिए प्रेरक शक्ति अथवा आवेग शब्द का प्रयोग किया। फ्रायड मूलप्रवृत्तियाँ पूर्व स्थिति में नहीं होती हैं जो मूल प्रवृत्ति का सामान्य अर्थ है, बल्कि शरीर में उत्तेजित करने वाले स्रोत को दर्शाती है। मूलप्रवृत्ति का उद्देश्य कुछ व्यवहार जैसे खाना, पीना, लैंगिक क्रियाओं कम करना अथवा हटाना होता है।

फ्रायड ने मूलप्रवृत्ति को दो श्रेणियों में बांटा है – जीवन की मूलप्रवृत्ति एवं मृत्यु की मूलप्रवृत्ति।

जीवन मूलप्रवृत्ति में भूख, प्यास, लैंगिकता निहित होती है और वे आत्म-सुरक्षा तथा जीवों के जीवन से सम्बन्धित होते हैं। ये सब रचनात्मक शक्तियाँ होती हैं जो जीवन को बनाये रखती हैं। ये जिस ऊर्जा द्वारा उसे प्रकट करती है वे लिबिडो कहलाती है।

मृत्यु मूलप्रवृत्तियाँ विनाशकारी शक्तियाँ होती है एवं वे आत्म-हत्या की तरफ निर्देशित कर सकती है, अथवा बाहर की तरफ घृणा एवं क्रोध को दिखलाती है। फ्रायड इस बात से सहमत थे जैसे जैसे बड़े होते हैं मानव व्यवहार को प्रेरित करने में क्रोध की मूलप्रवृत्ति उतनी ही शक्तिशाली होती है, जितनी लैंगिकता की प्रवृत्ति। फ्रायड के प्रवृत्तियों के स्वरूप का एक दूसरा उदाहरण मृत्यु मूलप्रवृत्ति है। उन्होंने मृत्यु के मूलप्रवृत्ति का दृष्टिकोण तभी विकसित किया जब मृत्यु का सम्बन्ध व्यक्तिगत हो गया। अपने कैसर की चिंता, उन्होंने लड़ाई की वीमत्सा को देखा। अपने पीछे दो बच्चों को छोड़कर उनकी पुत्री सोफिया की मृत्यु 26 वर्ष की आयु में हो गयी। फ्रायड

उस नुकसान से बहुत ज्यादा तबाह हो गए, तथा तीन सप्ताह से भी कम समय बाद ही मृत्यु मूलप्रवृत्ति के बारे में लिखने लगे।

फ्रायड अपने अन्दर की क्रोधित प्रवृत्ति के प्रति भी जागरूक थे। उनके सहयोगियों ने उन्हें एक अच्छा घृणित, तथा उनके कुछ लेखन तथा उनके मनोविश्लेषण आन्दोलन के लिए घृणा एवं विरोध दिखाया। मनोविश्लेषण द्वारा क्रोध के प्रत्यय को एक प्रेरक शक्ति के रूप में प्राप्त किया गया अपेक्षाकृत एक मृत्यु मूलप्रवृत्ति के रूप में जैसा उनके द्वारा बताया गया।

6.5.2 व्यक्तित्व का चेतन एवं अचेतन पक्ष

अपने प्रारम्भिक कार्य के दौरान फ्रायड ने यह विश्वास व्यक्त किया कि मानसिक जीवन के भाग हैं, चेतन एवं अचेतन। *चेतन* में व्यक्ति का वर्तमान विचार, जो एक व्यक्ति सोच रहा है अथवा प्राप्त हुए क्षणों का अनुभव कर रहा है, निहित होता है। चेतन भाग, छोटा एवं अमहत्वपूर्ण होता है, पर आइसबर्ग के छोटे भाग के रूप में दिखायी पड़ता है, यह संपूर्ण व्यक्तित्व का एक दिखावटी पक्ष होता है।

अचेतन के अन्दर विचार, इच्छाएँ एवं आवेग निहित होते हैं जिसके प्रति व्यक्ति विशेषरूप से जागरूक नहीं होता है। यद्यपि की इनमें से कुछ सामग्री हमेशा अचेतन में होती है, फ्रायड का विश्वास था कि इसमें से अधिकांश चेतन में आता है पर उसे क्रियात्मक रूप से *दमित* कर दिया जाता है, उसे चेतन से हटा दिया जाता है क्योंकि वह अत्यधिक चिंता उत्पन्न करने वाला होता है। अचेतन का बड़ा एवं शक्तिशाली भाग बड़े आइसबर्ग के टुकड़े के समान पानी की सतह के नीचे होता है - उसमें वे सारी मूल प्रवृत्तियाँ होती हैं जिसमें व्यक्ति के व्यवहार को उद्बलित करने की शक्ति होती है।

फ्रायड ने बाद में चेतन/अचेतन के भेद को संशोधित किया एवं उसकी जगह **उपांह (id)**, आत्म उपांह जो मोटे तौर पर फ्रायड के पहले के अचेतन के विचार का अनुसरण करता है, व्यक्तित्व का सबसे अधिक पुराना एवं कम पहुंच वाला भाग है।

उपांह (id) की शक्तिशाली शक्तियों में लैंगिकता एवं क्रोध की मूल प्रवृत्तियाँ निहित होती हैं। उपांह न्याय के मूल्य, अच्छा या बुरा एवं नैतिकता को नहीं जानता। उपांह तुरन्त सन्तुष्टि की शक्ति को खोजता है, बिना सच्चाई की स्थिति को जाने, वह खुशी के सिद्धान्त पर कार्य करता है, जिसका सम्बन्ध खुशी को प्राप्त कर तनाव को कम करना एवं दर्द से बचना होता है।

उपांह में चित्र की मुख्य ऊर्जा अथवा लिबिडो निहित होता है और तनाव कम करने में प्रदर्शित होता है। लिबिडो की ऊर्जा बढ़ने का परिणाम तनाव का बढ़ना होता है। बर्दाशत करने की सीमा तक इस तनाव को कम करने का प्रयास किया जाता है।

आवश्यकताओं की सन्तुष्ट करने तथा तनाव के स्तर को रहने लायक स्तर पर बनाये रखने के लिए वास्तविक संसार के साथ प्रतिक्रिया करते रहना चाहिए। उदाहरणार्थ एक भूखे व्यक्ति को भोजन खोजने का कार्य करना चाहिए यदि उसे भूख द्वारा उत्पन्न तनाव को कम करना है। अतः कोई महत्वपूर्ण लिंक उपांह की आवश्यकता एवं वास्तविकता की परिस्थितियों के मध्य स्थापित होना चाहिए।

अहम् (ego) उपाहं एव वाह्य संसार के अन्तर्क्रिया को बढ़ाने के लिए मध्यस्था एजेन्ट के रूप में कार्य करता है। अहम् कारण अथवा तार्किकता को प्रदर्शित करता है, अपेक्षाकृत उपाहं के बिना सोचने वाले विचार की अपेक्षा।

उपाहं वास्तविकता को जाने बिना उसके प्रति ललक रखता है। अहम् वास्तविकता के प्रति जागरूक रहता है, उसका परिचालन करता है एवं उपाहं को उसके अनुसार, परिचालित करता है। अहम् वास्तविकता के सिद्धांत का अनुसरण करता है, तथा उपाहं की खुशी प्राप्त करने वाली आवश्यकता को तब तक रोके रखती है जबकि एक उपयुक्त वस्तु उसकी आवश्यकता की पूर्ति करने अथवा तनाव को कम करने के लिए प्राप्त नहीं हो जाती। अहम् उपाहं के साथ स्वतंत्र रूप से नहीं रह सकता, यह उसकी उपाहं से खींचती है। अहम् उपाहं की सहायता के लिए रहता है तथा यह लगातार उपाहं की मूलप्रवृत्तियों को संतुष्ट करने का प्रयास करता है।

फ्रायड के व्यक्तित्व संरचना का तीसरा भाग **पराहं** है, जो जीवन में तब विकसित होता है जब बच्चे को माता-पिता अथवा ध्यान देने वाले लोगों द्वारा नियमों को करने का पाठ पुरस्कार एवं दण्ड प्रणाली द्वारा सीखाया/कराया जाता है। जो व्यवहार गलत है और जिसके लिए दण्ड मिलता है वह बच्चे के विवेक का एक भाग हो जाता है, जो पराहं का एक भाग है। अतः शैशवावस्था का व्यवहार प्रारम्भ ये माता-पिता के व्यवहार द्वारा नियंत्रित होता है। परन्तु यदि एक बार पराहं व्यवहार का एक पैटर्न बन जाता है, फिर व्यवहार आत्म-नियंत्रण द्वारा निर्धारित होता है। इस बिन्दु पर आकर व्यक्ति अपने पुरस्कार एवं दण्ड को प्रशासित करता है।

पराहं नैतिकता को प्रदर्शित करता है, एवं संपूर्णता के भूख का समर्थन करते हैं - संक्षेप में मनोवैज्ञानिक दृष्टि मानव जीवन के उच्च दिशा का दिखलाता हैं। पराहं, का उपाहं के साथ द्वंद होता है। अहम् के विपरीत जो उपाहं के संतुष्टि को आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं, पराहं इसको पूर्णतः रोकने का प्रयास करता है।

अतः फ्रायड ने व्यक्तित्व के साथ लड़ाई को जारी रखा। यह उपाहं की आवश्यकता को देर करता है, जिससे तनाव का प्रत्यक्ष करके उसे कम करता है। जब अहम् बहुत अधिक तनाव देता है, उसका परिणाम चिन्ता के रूप में जाना जाता है।

6.5.3 चिन्ता

अहम् को जब धमकी मिल रही होती है उस समय चिन्ता एक चेतावनी के रूप में क्रियान्वित होती है। फ्रायड ने तीन प्रकार की चिन्ता का वर्णन किया है - वस्तुगत, स्नायुविकृति, एवं नैतिक।

वस्तुगत चिन्ता: वास्तविक संसार में वास्तविक भय से उत्पन्न होती है। दूसरी दोनों इसी से निकाली गयी है।

स्नायुविकृति चिन्ता यह चिन्ता उपाहं मूलप्रवृत्ति को पूरा करने में छिपे हुए खतरे के शक्ति को पहचानने से उत्पन्न होती है। यह अपने में मूलप्रवृत्ति का भय नहीं होता, बल्कि दण्ड का भय होता है, जिस व्यवहार ये उपाहं का प्रभुत्व होता है। दूसरों शब्दों में स्नायुविकृति चिन्ता में दण्ड का भय होता है अथवा आवेगात्मक इच्छाओं की अभिव्यक्ति होती है।

नैतिक चिन्ता यह चिन्ता व्यक्ति के चेतन अथवा संज्ञानात्मक भय के कारण उत्पन्न होती है। जब व्यक्ति अपने संज्ञानात्मक (चेतन) नैतिक मूल्यों के विपरीत कोई कार्य करता है अथवा करने की सोचता है तब उसे शर्म अथवा हीनता का अनुभव होता है। अतः नैतिक चिन्ता इस पर निर्भर करती है कि व्यक्ति संज्ञान (चेतन) को विकास किस प्रकार का हुआ है। कम गुणी लोग कम नैतिक चिन्ता का अनुभव करेंगे।

6.5.4 रक्षा-युक्तियाँ

चिन्ता तनाव की अवस्था को उत्पन्न करती है, व्यक्ति को उसे कम करने के लिए प्रेरित करती है। फ्रायड ने यह बतलाया की अहम् चिन्ता से बचाव के लिए रक्षात्मक बचाव उत्पन्न करता है, जिन्हें **रक्षा युक्तियाँ** कहा जाता है। रक्षा युक्तियाँ वास्तविकता से अचेतन पलायन है। यह व्यवहार के कुछ ऐसे तरीके हैं जो चिन्ता के विपरीत प्रतिदिन के जीवन से उत्पन्न कुछ द्वंदों से समाधान के लिए अपनाएँ जाते हैं।

कुछ रक्षा युक्तियाँ निम्नलिखित हैं:

- **अस्वीकरण** .किसी वाह्य भय अथवा दर्दनाक घटना के अस्तित्व को अस्वीकार करना, उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति द्वारा बीमारी की अन्तिम अवस्था में मृत्यु को अस्वीकार कर सकता है।
- **विस्थापन** .उपाहं (id) आवेगों को धमकाने वाले या अनुपलब्ध वस्तु स्थानांतरित करना, जैसे अपने बॉस पर आये गुस्से को अपने बच्चे पर स्थानांतरित करना।
- **आत्मीकरण** .आत्मीकरण में व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के अनुरूप बनकर अपने मानसिक द्वंद्वको कम करता है या अपने अहम् को मानसिक द्वंद्वसे बचाता है।
- **प्रक्षेपण** .क्षुब्धतापूर्ण आवेगों को किसी दूसरे पर आरोपित करना; उदाहरणार्थ, यह कहना कि आप अपने प्रोफेसर से घृणा नहीं करते वो आपसे घृणा करते हैं।
- **युक्तिकरण** .व्यवहार को उसे अधिक स्वीकार करने तथा कम डराने वाला बनाने के लिए पुनः व्याख्या करना। उदाहरणार्थ, यह कहना कि जिस नौकरी से आपको निकाला गया है, वास्तव में वह किसी के लिए अच्छी नौकरी नहीं थी।
- **प्रतिक्रिया निर्माण** .इस रक्षायुक्ति में व्यक्ति अपने उपाहं को किसी कष्टकर एवं अप्रिय इच्छा तथा प्रेरणा में ठीक विपरीत इच्छा या प्रेरणा विकसित कर बचाता है। उदाहरणार्थ, यदि कोई अपनी लैंगिक लालसा से क्षुब्ध है, तो वह पोनोग्राफी के विपरीत धर्म यौद्धा बनकर खड़ा हो जाता है, अर्थात् उसकी बुराई करता है।
- **शमन** .इस प्रक्रिया में व्यक्ति जानबूझकर या प्रयत्न करके कष्टकर अथवा अर्वैयक्ति इच्छाओं को चेतन से अचेतन में भेजता है। अतः शमन की प्रक्रिया का व्यक्ति को ज्ञान होता है।
- **दमन** .ऐसी किसी चीज की उपस्थिति को नकारना जो चिन्ता उत्पन्न करने का कारण हो, जो चेतन से ऐच्छिक रूप से हट जाती है।
- **उदात्तीकरण** .उपाहं आवेगों को परिवर्तित करके सामाजिक रूप से स्वीकृत व्यवहार की तरफ ले जाना। उदाहरणार्थ, कामुकता/लैंगिकता की ऊर्जा को संरचनात्मक व्यवहार में ले आना।

6.5.5 मनोलैंगिक अवस्थाएँ

फ्रायड आश्वस्त थे कि उनके माता-पिता की मनस्तापी विक्षिप्त गड़बड़ी का प्रारम्भ उनकी बचपन के अनुभव से उत्पन्न हुई थीं, इस प्रकार फ्रायड वह पहले सिद्धान्तकारों में से एक थे। जिन्होंने बच्चे के विकास के महत्व पर बल दिया। उनका मानना था कि वयस्क के व्यक्तित्व पैटर्न का गठन लगभग पूरा विकास पाँच वर्ष की आयु से हो जाता है।

इस विषय पर फ्रायड के दृष्टिकोण को 'मनोलैंगिक विकास की अवस्था' की हेडिंग के अन्तर्गत रखा जा सकता है। मनोलैंगिक अवस्थाएँ लैंगिक विकास की अवस्था के द्वारा सहजता के साथ निर्धारित होती हैं, जिससे संभवतः प्रत्येक व्यक्ति गुजरता है, और जो व्यक्तित्व के स्वरूप को मजबूती के साथ आकार देती है। मनोलैंगिक अवस्थाओं में दो महत्वपूर्ण प्रक्रियाएँ जन्म लेती हैं – लिबिडो एवं स्थायीकरण।

लिबिडो मूलप्रवृत्त्यात्मक बल को इंगित करता है जो उपाहं के ऊर्जाकृत करता है। लिबिडो के त्यागने का नजदीकी सम्बन्ध सुख से होता है, लेकिन ऐसे सुख का केन्द्र (फोकस), एवं इसका लिबिडो का प्रदर्शन जैसे-जैसे व्यक्ति का विकास होता है, जो अपने पीछे लिबिडो की कम मात्रा छोड़ते हैं। यह प्रायः केवल घटना के सामान्य कोर्स में होता है। यदि लिबिडो ऊर्जा की अधिक मात्रा किसी विशेष अवस्था से बंध जाती है, इसका परिणाम **स्थायीकरण** होता है। एक अवस्था के दौरान स्थायीकरण की जड़े बहुत कम अथवा बहुत संतुष्टि देते हैं दोनों ही परिस्थितियों में परिणाम हानिकारक होते हैं।

व्यक्ति बहुत अधिक मानसिक ऊर्जा अपने पीछे छोड़ता है, जिसमें से बहुत कम पूरे वयस्क विकास के लिए उपलब्ध होता है, उसका परिणाम यह हो सकता है कि किसी अवस्था में स्थायीकरण प्राप्त हो जाता है। इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि यदि विकास की प्रारम्भिक अवस्था के स्थायीकरण के द्वारा ऊर्जा का निष्कासन हो जाता है तब बची हुयी मात्रा पूर्व वयस्क विकास के लिए पूर्ण नहीं होती। इस परिस्थिति से व्यक्ति में अपरिपक्व व्यक्तित्व एवं मनोवैज्ञानिक विकृतियाँ दिखलायी पड़ सकती हैं।

फ्रायड के अनुसार, प्रत्येक मनोलैंगिक अवस्थाओं में व्यक्ति विकसित एवं संबद्धित होता है शरीर के प्रत्येक भाग में सुख की अनुभूति होती है। प्रथम **मुखावस्था** (0-1 वर्ष), बच्चा मुख्यतः मुख द्वारा सुख को खोजता है। बच्चा प्रारम्भिक संतुष्टि भोजन लेने में एवं अंगूठा चूसने में प्राप्त करता है। यदि इस अवस्था में बहुत कम अथवा बहुत अधिक संतुष्टि प्राप्त होती है, व्यक्ति उस पर स्थिर हो जाता है। फ्रायड ने यह बतलाया कि मुखावस्था की अत्यधिक तुष्टिकरण अथवा कुण्ठा की आवश्यकता मुखावस्था की थीम में व्यक्ति में स्थायीकरण उत्पन्न करती है। बहुत कम तुष्टिकरण का परिणाम व्यक्तित्व में बाह्य रूप से दूसरे पर अत्यधिक निर्भरता होती है, विशेष रूप से जब बच्चे में दाँत निकल आते हैं, इसका परिणाम यह होता है कि उसका व्यक्तित्व अत्यधिक आक्रामक हो जाता है, विशेष रूप से शाब्दिक व्यंग्य अथवा मजाक के रूप में दाँत काटने के रूप में।

दूसरी, **गुदावस्था** (1 से 3 वर्ष), माता-पिता द्वारा बच्चे को मल-मूत्र त्यागने के प्रशिक्षण देने के प्रयास के दौरान प्राप्त होती है। इस अवस्था के दौरान इसे त्यागने की प्रक्रिया सुख प्राप्त करने का प्राथमिक फोकस होता है। इस अवस्था के परिणामस्वरूप प्राप्त होता है, जिसके लिए व्यक्ति में अत्यधिक बाध्यता होती है -

जिसकी वजह से वे कोई भी काम अधूरा नहीं छोड़ सकते हैं तथा जो कुछ भी करते हैं उसमें पूर्णता की इच्छा रखते हैं। इसके विपरीत स्थायीकरण की जड़े बहुत आराम वाले मल-मूत्र त्यागने की हो सकती हैं, इस प्रशिक्षण का परिणाम जो लोग अनुशासित नहीं होते, आवेगात्मक होते हैं तथा बहुत अधिक दयालु होते हैं, उनमें देखने को मिलता है।

चार वर्ष की अवस्था में लिंग आनन्द प्राप्त करने का प्राथमिक स्रोत हो जाता है, तथा बच्चे तीसरी लिंग **प्रधानावस्था** (4 से 6 वर्ष) में प्रवेश करते हैं। फ्रायड का यह अनुमान था कि इस समय बच्चे कामुकता की कल्पना हेतु विपरीत लिंग के माता-पिता की कल्पना करते हैं – जिस फेनामेनन को फ्रायड ने ओडिपस कॉम्प्लेक्स (लड़कियों के लिए इलेक्ट्रा कॉम्प्लेक्स) ओडिपस के पश्चात् प्राचीन ग्रीक साहित्य में एक चरित्र ने अनजाने में अपने पिता को मार कर माता से विवाह कर लिया। इस प्रकार की इच्छा के लिए दण्ड का भय आता है। लड़कों में बध्ध्याकरण के दण्ड का भय होता है, जो उन्हें बध्ध्याकरण चिन्ता की तरफ ले जाता है। लड़कियों में दण्ड का भय प्यार का खोना चिन्ता की तरफ ले जाता है, इन दोनों ही केंसों में यह भय ओडिपस काम्प्लेक्स के प्रस्ताव के बारे में अथवा उसी लिंग के माता-पिता से आत्मीकरण के लिए होता है। दूसरे शब्दों में छोटा लड़का अपनी मां के लिए लैंगिक इच्छा को छोड़ देता है और अपने पिता को एक प्रतिस्पर्धी की जगह एवं मॉडल के रूप में देखता है, जब कि छोटी लड़की अपनी लैंगिक इच्छा को अपने पिता के लिए छोड़ देती है, और अपनी मां को मॉडल के रूप में देखती है।

संभवतः फ्रायड का सबसे अधिक विवादाग्रस्त सुझाव इस विचार के लिए था कि छोटी लड़की में पुरुष अंग की कमी के कारण लिंग इर्ष्या का अनुभव होता है। फ्रायड के अनुसार, इस दुश्मनी के कारण लड़कियों में हीनता एवं दुश्मनी की भावना को अनुभव करती है — वे इस घृणित भावना को व्यस्कावस्था तक रखती है।

ओडिपस द्वंद्व के प्रस्ताव के पश्चात् फ्रायड के अनुसार बच्चे चौथी अवस्था —**अव्यक्तावस्था** (6 से तरुणावस्था) में प्रवेश करते हैं, जिसमें कामुकता की इच्छा बहुत कम जो जाती है। अन्त में वयः सन्धि अवस्था के दौरान, वयस्क पाँचवी अवस्था **जनेन्द्रियवस्था** (तरुणावस्था से आगे) में प्रवेश करता है। इस अवस्था में खुशी पुनः जनेन्द्रियों पर ही फोकस होता है। यद्यपि की कामुकता लगाव के साथ मिल जाती है, और लोग वयस्क प्यार के योग्य हो जाते हैं। फ्रायड के अनुसार, इस अन्तिम अवस्था में आगे बढ़ना तभी सम्भव होता है, यदि प्रारम्भिक अवस्था में गम्भीर स्थायीकरण का प्राप्त हुआ हो। यदि ऐसा स्थायीकरण होता है, उस अवस्था में विकास रुक जाता है, जिससे विभिन्न विकृतियाँ उत्पन्न होती हैं।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 3

1) स्वप्न विश्लेषण कैसे उपयोगी है?

.....

.....

.....

.....

2) मनोलैंगिक अवस्थाओं में लिबिडो एवं स्थायीकरण की क्या भूमिका है?

.....

.....

.....

.....

.....

6.6 आलोचनाएँ

यद्यपि बहुत अधिक लोकप्रिय एवं प्रभावशाली होने के पश्चात् भी फ्रायड को बहुत अधिक आलोचनाओं का सामना करना पड़ा।

6.6.1 आँकड़ा संकलन की विधि

फ्रायड के आलोचना की सबसे अधिक निशाना उनके आँकड़ा संकलन की विधि थी। उन्होंने अपने मरीजों की प्रतिक्रिया से ही अन्तर्दृष्टि एवं निष्कर्ष निकाला जब वे उनका विश्लेषण कर रहे थे। प्रयोगात्मक विधि के क्रमबद्ध तरीके से वस्तुगत आँकड़ा संकलन नियंत्रित निरीक्षित अवस्था में किये जाने से तुलना करने पर, फ्रायड के विधि में बहुत अधिक कमियाँ पायी गयीं:

- 1) फ्रायड ने जिन परिस्थितियों में आँकड़ा संकलन किया, वह अनियंत्रित तथा अक्रमबद्ध था। उन्होंने प्रत्येक रोगी की प्रतिलिपि नहीं बनाया बल्कि रोगी को देखने के कुछ घंटे बाद उसके नोट्स बनाए। कुछ वास्तविक आँकड़े (मरीज के वास्तविक शब्द) निश्चित रूप से गायब हो जाते हैं। क्योंकि वे अपने स्मरण में नहीं होते हैं, और अच्छी तरह से लिखे न जाने के कारण वे गायब हो जाते हैं अथवा गलत हो जाते हैं। अतः वही आँकड़ा उपलब्ध होता है, जो फ्रायड को याद रहता है।
- 2) यह सम्भव है कि फ्रायड जब मरीजों के शब्दों को पुनः स्मरित करते हैं तो उसकी पुनः व्याख्या करे। वे अपनी इच्छा से पथ प्रदर्शित होकर उस सामग्री को खोजते हैं, जो उनके विचारों को सहयोग करे। दूसरे शब्दों में वे केवल उसी को स्मरण एवं रिकार्ड करना चाहते हैं जिसे वे सुनना चाहते हैं। फ्रायड के नोट्स सही हो सकते हैं, परन्तु इसको जानना संभव नहीं है क्योंकि मूल आँकड़ा उपलब्ध नहीं होता है।

6.6.2 प्रकाशित केस हिस्ट्री

फ्रायड द्वारा इतिहास से जुड़े प्रकाशित मामले एवं उनके चिकित्सा सत्र में लिए नोट्स के मध्य अंतर होता है। एक शोधकर्ता ने फ्रायड के नोट्स एवं इतिहास से जुड़े प्रकाशित मामले की तुलना की तथा उसमें बहुत से अन्तर मिले। जिसमें से कुछ निम्न हैं :

- एक लम्बे समय का विश्लेषण
- घटनाओं का गलत अनुक्रम प्रकट हुआ, और

- एक असुरक्षित दावा है कि रोगी ठीक हो गया था।

इस बात को निर्धारित करने का कोई रास्ता नहीं है कि फ्रायड ने यह तोड़ मरोड़/परिवर्तन जानबूझकर अपने अचेतन का सहयोग प्रदान करने के लिए किया अथवा ये उनके अपने अचेतन का परिणाम था। इतिहासकार ऐसी कोई भी संभावित समान त्रुटि फ्रायड के दूसरे केस अध्ययन में खोज सकते हैं, क्योंकि उन्होंने अपने मरीजों की अधिकांश फाइलों को नष्ट कर दिया था।

इसके अतिरिक्त फ्रायड ने ब्रुअर से अलग होने के पश्चात् केवल छः केस इतिहास प्रकाशित किए तथा उसमें से कोई मनोविश्लेषण प्रणाली के अकाट्य सहयोग के प्रमाण को प्रदर्शित नहीं करता। मनोविश्लेषण सिद्धान्त के पक्ष में ऐसे संदिग्ध प्रमाण प्रस्तुत करते हैं कि आश्चर्यचकित हो सकता है कि क्यों फ्रायड ने उसे प्रकाशित करने के लिए परेशान हुए उसमें दो केस अपूर्ण थे, तथा चिकित्सा अप्रभावकारी थी एक तीसरे केस की चिकित्सा फ्रायड द्वारा नहीं की गयी थी।

6.6.3 फ्रायड का आँकड़ा

फ्रायड के मरीजों के वृत्तांत को बचपन के अनुभवों से मिलाने के कुछ प्रयास किये थे। आलोचकों का यह मत है कि उनको इन वृत्तांतों को उनके सम्बन्धियों एवं मित्रों से वर्णित घटनाओं के सम्बन्धित प्रश्न पूछकर जानने करने का प्रयास किया जाना चाहिए था। अतः वैज्ञानिक सिद्धान्त के पहले चरण के बनाने में आँकड़ा संकलन विशेषीकृत होना चाहिए, फ्रायड के मामले में ये आँकड़े अपूर्ण, अपूर्णकालिक, एवं गलत हैं।

उनके आँकड़ों से अनुमान निकालने तथा सामान्यीकरण के सम्बन्ध में अधिक कुछ नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह कैसे किया गया इसका सही ढंग से पता नहीं है क्योंकि फ्रायड ने कभी भी इनके कारणों अथवा दलीलों की व्याख्या नहीं की। उनके आँकड़ों का सांख्यिकीय रूप से विश्लेषित एवं मात्रात्मकबद्ध नहीं किया जा सका, इतिहासकार उसकी विश्वसनीयता अथवा सांख्यिकीय सार्थक का निर्धारण नहीं कर सकते।

6.6.4 मानव स्वभाव के प्रति धारणाएं

बहुत से सिद्धान्तकारों ने यह तर्क किया कि फ्रायड ने जैविकीय शक्तियों पर बहुत अधिक बल दिया, विशेष रूप से काम (सेक्स)। तंत्रिकातापी निरीक्षण के आधार पर केवल व्यक्तित्व सिद्धान्त को विकसित करने के कारण तथा स्वस्थ व्यक्तियों के संवेगात्मक शीलगुणों की उपेक्षा करके भी फ्रायड की बहुत आलोचना हुयी।

6.6.5 महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण

महिलाओं के बारे में फ्रायड के दृष्टिकोण को चुनौती दी गयी। उनका सुझाव था कि महिलाओं में पराहं का विकास कम होता है तथा वे अपने शरीर के बारे में हीनता का भाव अनुभव करती हैं। कार्न हार्वी वह पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने फ्रायड की इस मुद्दे पर जनमानस में आलोचना की थी तथा उनको कामुक कहा था। बहुत से विश्लेषण आज इस बात से सहमत हैं कि फ्रायड का महिलाओं के मनोलैंगिक विकास के बारे में विचार गलत एवं प्रमाणित नहीं था।

6.6.6 उपचार की विधि

दूसरी चिकित्सा की तुलना में फ्रायड का उपचार बहुत अधिक खर्चीला तथा अधिक समय (कई सेशन्स) लेने वाला था, परिणामस्वरूप उनकी लोकप्रियता में गिरावट आई।

6.7 संपूर्ण प्रभाव

मनोविश्लेषण के संस्थापक सिगमंडफ्रायड अन्तिम सदी के सबसे अधिक प्रसिद्ध व्यक्ति जाने जाते थे। मनोविश्लेषण मनोविज्ञान की संभवतः सबसे अधिक जानी जाने वाली प्रणाली है। इसकी आलोचना के पश्चात भी वह अपने पीछे न समाप्त होने वाली लम्बी पैतृक सम्पत्ति छोड़ गये।

सामान्य रूप से फ्रायड के विचारों में रुचि आज भी शिखर पर है। बीसवीं शताब्दी के मनोविज्ञान पर फ्रायड का चमत्कारिक प्रभाव था। उनका मनोविश्लेषण व्यक्तित्व का प्रथम विस्तृत सिद्धान्त था।

यूनाइटेड स्टेट की लोकप्रिय संस्कृति पर फ्रायड का प्रभाव बहुत अधिक था, जो 1909 में क्लार्क विश्वविद्यालय में भ्रमण के तुरन्त बाद प्रमाणित हो गयी। समाचार पत्रों में फ्रायड के बारे में बहुत सी कहानियाँ छपीं, तथा 1920 तक फ्रायड के मनोविश्लेषण पर दो सौ से ज्यादा पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी थी। फ्रायड के विचारों के लिए यह उत्साह उनको शैक्षणिक मनोविज्ञान में स्वीकार किये जाने से पूर्व प्राप्त हो चुका था।

फ्रायड के मनोविश्लेषण के प्रभाव का परावर्तन पुनः आर्ट, साहित्य एवं दर्शनशास्त्र पर जारी रहा। अचेतन का उनके लेखों ने कला के प्रदर्शन की नयी व्याख्या दी। फलस्वरूप, साहित्यिक एवं कलात्मक प्रदर्शन की व्याख्या साहित्य की क्रियाओं के अचेतन के प्रभाव तथा अचेतन के प्रत्यक्षण के प्रभाव पर होती है। पाश्चात्य विचारों पर मनोविश्लेषण का प्रभाव वैसा ही था, जैसा साहित्य में, दर्शनशास्त्र में एवं कला में प्रदर्शित होता है, बीसवीं शताब्दी ने व्यवहार, कला, साहित्य एवं मनोरंजन में कामुकता के प्रभाव को कम होते देखा है। आधुनिक समय कामुक स्वतंत्रता आंशिक रूप से फ्रायड के कार्य की परिभाषा है, क्योंकि काम (सेक्स) पर प्रभाव ने उनके विचारों को लोकप्रिय बनाने में सहायता की। वैज्ञानिक जर्नल में काम (सेक्स) से सम्बन्धित प्रकाशित लेख में संवेदनात्मक अपील थी। इसके अतिरिक्त कुछ लोकप्रिय मनोविश्लेषण शब्द जो फ्रायड द्वारा दिया गया जैसे अचेतन मन एवं स्वप्न विश्लेषण ने संभवतः उन्हें प्रत्येक समय के लिए एक जाना माना मनोवैज्ञानिक बना दिया, बहुत हद तक बहुत से लोग फ्रायड को मनोविज्ञान के संपूर्ण क्षेत्र का पर्याय मानते हैं।

वैज्ञानिक कमी तथा कमजोर पद्धति के कारण आलोचना के बाद भी फ्रायड का मनोविश्लेषण आधुनिक मनोविज्ञान में निरन्तर एक महत्वपूर्ण बल बना रहेगा।

बॉक्स 6.2 : वर्तमान समय में फ्रायड

इस बात को नकारे बिना, फ्रायड का मनोविज्ञान पर बहुत प्रभाव था। आधुनिक समय में शोधार्थी फ्रायड के संप्रत्यय पर प्रश्न करते थे। उन्नतशील संज्ञानात्मक तथा तंत्रिकाविज्ञान ने फ्रायड के संप्रत्यय के लिए वैज्ञानिक व्याख्या दी। तंत्रिका मनोविश्लेषण नामक सोसायूटी जो मार्क सोल्मस द्वारा बनायी गयी थी। उसके उपाहं एवं अहम् जैसे प्रत्ययो के लिए तंत्रिका वैज्ञानिक व्याख्या दी। सुसान एंडरसन एवं

सहयोगियों द्वारा किये गये सामाजिक संज्ञानात्मक शोध में अन्तरण के सामाजिक-संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य को दिया गया। इस प्रगति ने फ्रायड के मनोविश्लेषण के क्षेत्र को बढ़ाया।

इसके विपरीत स्मृति, आघात, चेतन एवं मनोचिकित्सा के आधुनिक शोध ने बिल्कुल अलग तस्वीर प्रस्तुत की। एलिजाबेथ लोपट्स ने अपने गलत स्मरण के शोध में बच्चे की दमित स्मृतियाँ सही ढंग से प्रकट होती हैं इस विचार को नकार दिया मैक्नैली का कार्य यह प्रदर्शित करता है कि आघात के बारे में फ्रायड ने जो सुझाया उसे भुलाया नहीं जा सकता। किलस्ट्रॉम ने चेतना पर अपने कार्य ने आधार पर मनोविश्लेषण की बहुत आलोचना की तथा इसको पुराना बताया। इस प्रकार के शोधों ने फ्रायड के मनोविश्लेषण के केन्द्रीय प्रत्यय को पूर्णतः नकार दिया, तथा यह सुझाव दिया कि आज के समय का मनोविज्ञान सिगमंडफ्रायड एवं उनके विचार से अलग कुछ कर सकता है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 4

1) फ्रायड के प्रकाशित केस हिस्ट्री की आलोचनाएं क्या हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

2) फ्रायड की लोकप्रियता के पीछे किन कारणों को माना जा सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

6.8 सारांश

इस इकाई के अंत में हम उन सभी प्रमुख बिन्दुओं का संक्षेप में विवरण प्रस्तुत करेंगे, जिन्हें अब तक हमने पढ़ा है :

- मनोविश्लेषण औपचारिक रूप से 1895 में प्रारम्भ हुआ।
- मनोविज्ञान के विज्ञान का विकास एक शैक्षणिक एवं प्रयोगात्मक स्थापना (सेटिंग) में हुआ, जब कि मनोविश्लेषण का विकास नैदानिक स्थापना (सेटिंग) में हुआ।

- अपने प्रारम्भिक समय में मनोविज्ञान का सम्बन्ध चेतना के तत्व एवं प्रक्रियाओं को खोजना था। संवेदना, प्रत्यक्षण, स्मृति एवं विचारना इनकी रुचि के मुख्य विषय थे। जबकि दूसरी तरफ मनोविज्ञान का सम्बन्ध अचेतन से था। इसकी रुचि अभिप्रेरणा, संवेग, द्वंद, तंत्रिकातापी लक्षणों, स्वप्न एवं चरित्र शीलगुण में थी। रुचि के क्षेत्र के इस अन्तर ने बहुत समय तक मनोविज्ञान एवं मनोविश्लेषण को अलग रखा।
- विभिन्न दर्शन शास्त्रियों जैसे हिबनीज, हर्बट एवं फेकनर द्वारा प्रारम्भ में अचेतन के सम्बन्ध में दिये गये प्रारम्भिक सिद्धान्तों से फ्रायड प्रभावित थे।
- 1880 में यूरोप में अचेतना बौद्धिक जलवायु का बहुत बड़ा भाग था, यह वह समय था जब फ्रायड ने अपनी नैदानिक अभ्यास (प्रेक्टिस) प्रारम्भ की थी। यह केवल व्यावसायिक के रुचि का विषय नहीं था, बल्कि यह आम लोगों के बीच बातचीत का एक लोकप्रिय विषय था।
- दैहिक अभिमुखता के विपरीत एक विद्रोह के रूप में मनोविश्लेषण का विकास हुआ था, जिसने पाया की असामान्य व्यवहार शारीरिक कारणों जैसे मस्तिष्क चोट, स्नायु की कम संवेदनात्मकता अथवा स्नायु जिनमें अधिक बड़ापन हो ले उत्पन्न होते हैं।
- शार्को ने हिस्टेरिया के मरीजों का अध्ययन करने के लिए सम्मोहन विशद रूप से प्रयोग किया। फ्रायड कम समय के लिए शार्को के छात्र थे, तथा उनके विकृतियों के इलाज के लिए सम्मोहन के प्रयोग से बहुत अधिक प्रभावित थे। उन्होंने सम्मोहन का प्रयोग विकृतियों के इलाज के लिए एक विधि के रूप में किया।
- पियरे जेनेट ने मानसिक तथ्यों/घटनाओं को रखा - विशेष रूप से स्मृति दुर्बलता, स्थिर विचार, एवं अचेतन बल - एक कारणात्मक कारक के रूप में, एवं उन्होंने सम्मोहन को उपचार की एक विधि के रूप में चुना। जेनेट के कार्य ने फ्रायड के बहुत से विचारों का पूर्वानुमान किया।
- डार्विन ने बहुत से ऐसे विचारों की विवेचना की जिसे फ्रायड के आगे चलकर अपने मनोविश्लेषण का केन्द्रीय तथ्य बनाया, जिसमें अचेतन मानसिक प्रक्रियाएँ, द्वंद, स्वप्न का महत्व, कुछ व्यवहारिक लक्षणों के छिपे प्रतीक तथा लैंगिक उद्दोलन का महत्व सम्मिलित था।
- फ्रायड के कार्य में बहुत से लैंगिक तत्वों का एक या एक से अधिक प्रारूप में अनुमानित किया जा चुका था। क्योंकि व्यावसायिक एवं सामान्य जन मानस पहले से ही ग्रहणशील थे, फ्रायड के विचारों पर बहुत ध्यान दिया गया।
- फ्रायड के किसी भी कार्य के प्रकाशित होने से पूर्व ही विरेचन का प्रत्यय लोकप्रिय हो चुका था। 1890 तक जर्मन में लगभग 140 से अधिक प्रकाशन विरेचन से सम्बन्धित हो चुके थे।
- सत्रहवीं शताब्दी के बाद में फ्रायड के स्वप्न से सम्बन्धित बहुत से विचारों का पूर्वानुमान दर्शनशास्त्र एवं शरीरशास्त्र के साहित्य में हो चुका था।
- फ्रायड ने ब्रुअर के विरेचन विधि को स्वीकार किया एवं धीरे-धीरे सम्मोहन को अस्वीकार किया।

- फ्रायड ने सम्मोहन को एक उपचार के रूप में विशेष रूप से अस्वीकार किया, क्योंकि उन्होंने यह अनुभव किया कि हर किसी को सम्मोहित नहीं किया जा सकता, कुछ मरीजों ने सम्मोहन की अवस्था में जो बताया उसे विश्वास करने से इंकार किया, और जब सम्मोहन की सुझावशीलता में लक्षणों का एक सेट बढ़ता था, प्रायः ये लक्षण आ जाते थे।
- विरेचन विधि से फ्रायड ने स्वतंत्र साहचर्य की तकनीकी विकसित की। स्वतंत्र साहचर्य में मरीज को एक काउच पर लिटा दिया जाता था तथा उसे लगातार खुले रूप से बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था, प्रत्येक विचार की पूरी व्याख्या करनी होती थी, यह कितना भी परेशान करने वाला, अमहत्वपूर्ण एवं बेवकूफी से सम्बन्धित है।
- फ्रायड के मनोविश्लेषण प्रणाली का लक्ष्य दमित स्मृतियों अथवा विचारों को चेतन में लाना था, जिसके लिए यह माना जाता था कि वह रोगी के असामान्य व्यवहार का स्रोत है।
- फ्रायड एवं ब्रुअर ने पुस्तक स्टडी ऑफ हिस्टीरिया एक साथ लिखी, जो 1895 में प्रकाशित हुयी। यह पहली पुस्तक थी जो मनोविश्लेषण पर लिखी गयी, जिसके लिए यह कहा गया कि यह मनोविश्लेषण की आधिकारिक शुरुआत थी।
- 1887 में फ्रायड ने अपने स्वप्नों का आत्म-विश्लेषण प्रारम्भ किया। यह आत्म-विश्लेषण लगभग दो वर्ष तक जारी रहा, तथा इसका चरमोत्कर्ष द इनटरप्रेटेशन ऑफ ड्रीम(1900) के प्रकाशन के रूप में हुआ। एक पुस्तक जो फ्रायड के मुख्य कार्य के रूप में जानी जाती है। प्रथम बार इसमें उन्होंने ओडिपस काम्प्लेक्स के स्वरूप को बतलाया, बाल्यावस्था के अनुभव को विशेष रूप से खींचा।
- 1901 में, फ्रायड ने द साइकोपथलजी ऑफ एव्रीडे लाइफ प्रकाशित की। इस पुस्तक में उन्होंने मनोविश्लेषण को सभी लोगों के लिए सामन्यीकृत किया एवं केवल उन्हीं लोगों के लिए नहीं जो मनोवैज्ञानिक विकृतियों से ग्रसित है। यह पुस्तक वह है जिसमें फ्रायड के सिद्धान्त ने आकार लेना प्रारम्भ किया।
- 1909 में ग्रेनविले स्टैन्ली हाल ने फ्रायड ने क्लार्क विश्वविद्यालय के बीसवीं शताब्दी समारोह में आमन्त्रित किया। अमेरिका के इस भ्रमण से फ्रायड को अन्तर्राष्ट्रीय पहचान मिली। अमेरिका ने फ्रायड के भाषण को बहुत अधिक पसन्द किया गया।
- फ्रायड ने पाया की स्वतंत्र साहचर्य विधि को सदैव स्वतंत्रतापूर्वक संचालित नहीं किया जा सकता, बहुत जल्द अथवा देर में मरीज के एक ऐसे बिन्दु पर पहुंच जाता है जहां से वह अपने पुनः एकत्रण को जारी रखने में इच्छुक नहीं होता है। उनका विश्वास है कि प्रतिरोध, दमन एवं अन्तरण की भूमिका की प्रक्रियाएँ उनके विगत घटनाओं को पुनः स्मरण में अनिच्छा उत्पन्न करती है।
- उपचार की विधि के रूप में मनोविश्लेषण के बढ़ते हुए उपयोग के बावजूद, फ्रायड की इच्छा मानव व्यवहार के गत्यात्मकता की व्याख्या करना था। उन्होंने अपने को चिकित्सक की अपेक्षा एवं वैज्ञानिक के रूप में पहचाना, और उन्होंने स्वतंत्र साहचर्य तथा स्वप्न विश्लेषण तकनीक को अपने अध्ययनों में आँकड़ा संकलन हेतु शोध उपकरण के रूप में दृष्टिगत किया।

- प्रयोगात्मक उपागम पर फ्रायड का बहुत कम विश्वास था। यद्यपि उनका यह विश्वास था कि उनका शोध वैज्ञानिक है और वह भी मरीजों का केस इतिहास, एवं उनका स्वयं का आत्म-विश्लेषण से उनके निष्कर्षों को बहुत सहयोग मिला।
- फ्रायड ने मूलप्रवृत्ति शब्द का प्रयोग एक चालक बल अथवा आवेश के रूप में किया। फ्रायड की मूलप्रवृत्ति पहले से प्रवृत्त उत्तराधिकारी नहीं है - मूलप्रवृत्ति का सामान्य अर्थ - बल्कि यह शरीर में उत्तेजना के स्रोतों को प्रदर्शित करता है। मूलप्रवृत्ति का लक्ष्य उत्तेजनात्मकता को कुछ व्यवहारों जैसे खाना, पीना एवं कामुकता क्रियाओं द्वारा कम करना है। फ्रायड ने मूलप्रवृत्तियों को दो समूह में वर्गीकृत किया - जीवन मूलप्रवृत्ति एवं मृत्यु मूलप्रवृत्ति।
- अपने प्रारम्भिक कार्य में फ्रायड ने यह विश्वास व्यक्त किया कि मानसिक जीवन के दो भाग होते हैं - चेतन एवं अचेतन। चेतन भाग बर्फ के टुकड़े का दृष्टिगत भाग होता है, जो छोटा, असार्थक होता है, यह संपूर्ण व्यक्तित्व का दिखावटी पक्ष होता है। बड़ा एवं शक्तिशाली अचेतन - बर्फ में टुकड़े के बड़े भाग के समान होता है जो पानी के सतह की नीचे होता है - जिसमें मूलप्रवृत्तियों के वे सब चालक बल होते हैं जो मानव व्यवहार के पीछे होते हैं।
- फ्रायड का व्यक्तित्व में अहम् के दबाव एवं विपरीत बलों के लिए संघर्ष सदैव जारी रहा। इसे उपाहं की आवश्यकता की देर करने का प्रयास तनाव से छुटकारा पाने की आवश्यकता का प्रत्यक्षण एवं उसमें हेरा-फेरी, तथा संपूर्णता के लिए पराहं के प्रतिस्पर्धा से बचाव का प्रयास करना। जब भी अहम् बहुत अधिक तनावग्रसित होता है, उसे प्राप्त परिणाम चिन्ता के रूप में जाना जाता है।
- चिन्ता चेतावनी देने का कार्य करती है कि अहम् को धमकाया जा रहा है। फ्रायड ने तीन प्रकार की चिन्ता का वर्णन किया है - वस्तुगत, तंत्रिकातापी एवं नैतिक।
- फ्रायड ने बतलाया कि अहम् चिन्ता के प्रति बचाव सुरक्षा विकसित करता है, जिसे रक्षा युक्तियाँ कहा जाता है। रक्षा युक्तियाँ वास्तविकता का अचेतन अस्वीकरण अथवा विकृत है। यह व्यवहार की वह विधियाँ हैं जिनको प्रतिदिन के जीवन के द्वंदों से उत्पन्न, चिन्ता को बचाने के लिए स्वीकार किया जाता है।
- फ्रायड इस बात से सहमत थे कि उनके मरीजों की तंत्रिकात्मक क्षुब्धता उनके बाल्यावस्था के अनुभव से उत्पन्न होते हैं, और इस आधार पर वे बचपन के विकास के महत्व को बल देने वाले पहले सिद्धान्तकार बन गये। उनका विश्वास था कि वयस्क के व्यक्तित्व का प्रतिमान पूरी तरह पांच वर्ष की उम्र में बन जाता है।
- फ्रायड ने मनालैंगिक विकास की पांच अवस्थाओं को बताया - मुखावस्था, गुदावस्था, शिशनावस्था, अव्यक्तावस्था, जनेन्द्रियावस्था।
- फ्रायड के आँकड़ा संकलन की विधि आलोचना का मुख्य लक्ष्य रहा। उन्होंने अपने मरीजों से जिनका विश्लेषण किया जा रहा था उनकी प्रतिक्रियाओं से अन्तर्दृष्टि एवं निष्कर्ष प्राप्त किया। प्रयोगात्मक विधि के व्यवस्थिति ढंग से निरीक्षण की नियंत्रित परिस्थितियाँ वस्तुगत आँकड़ों को एकत्रित करना, फ्रायड की विधि में बहुत सी कमियाँ पायी गयीं।

- सामान्य रूप से फ्रायड के मनोविश्लेषण का मजबूत प्रभाव शैक्षणिक मनोविज्ञान पर था, तथा फ्रायड के विचारों में रुचि उच्च थी। बीसवीं शताब्दी के मनोविज्ञान में फ्रायड का बहुत अधिक प्रभाव था। उनका मनोविश्लेषण व्यक्तित्व का प्रथम विस्तृत सिद्धान्त था।
- फ्रायड के मनोविश्लेषण का पुनः परावर्तन, कला, साहित्य एवं दर्शनशास्त्र पर जारी था। अचेतन पर उनके लेख ने साहित्यिक अभिव्यक्ति को नयी व्याख्या थी।
- बीसवीं शताब्दी ने व्यवहार में लैंगिकता, कला, साहित्य एवं मनोरंजन की कमी को होते देखा। आधुनिक समय लैंगिकता की स्वच्छंदता फ्रायड के कार्य का ही परिणाम था, क्योंकि लैंगिकता पर प्रभाव ने उनके विचारों को लोकप्रियहीन में सहायता की।
- फ्रायड द्वारा दिये गये कुछ प्रचलित मनोविश्लेषित शब्द जैसे अचेतन मन एवं स्वप्न विश्लेषण ने उनको उस समय का एक जाना माना मनोवैज्ञानिक बना दिया, इस हद तक कि कुछ लोग फ्रायड को मनोविज्ञान का पर्याय मानने लगे।

6.9 मुख्य शब्द

मनोविश्लेषण	: सिगमंडफ्रायड द्वारा विकसित सम्प्रदाय, जो व्यवहार को निर्धारित करने के लिए अचेतन एवं बाल्यावस्था के अनुभवों पर बल देते हैं।
विरेचन	: वह प्रक्रिया, जो जटिल संवेगों को चेतन अवस्था में लाकर उसे समाप्त करने अथवा कम करने का प्रयास करती है।
स्वतंत्र साहचर्य	: उपचारात्मक सत्र में खुले एवं लगातार रूप से बातचीत करना, प्रत्येक विचारों को पूरी तरह प्रदर्शित करना, बिना इसकी चिन्ता किये कि वह कितना परेशान करने वाला, महत्वपूर्ण अथवा मूर्खतापूर्ण है।
प्रतिरोध	: दर्द भरी स्मृतियों को न बतलाना अथवा रोक लेना।
दमन	: अस्वीकृत विचारों, स्मृतियों एवं इच्छाओं को चेतन जागरूकता से बाहर करने की प्रक्रिया।
अन्तरण	: वह प्रक्रिया, जिसके द्वारा मरीज चिकित्सक को इस प्रकार जवाब देता है जैसे चिकित्सक उसके लिए महत्वपूर्ण व्यक्ति है। जैसे उसके माता-पिता।
स्वप्न विश्लेषण	: फ्रायड के मनोविश्लेषण में उपचार की एक महत्वपूर्ण विधि। फ्रायड का विश्वास है कि स्वप्न दमित इच्छाओं के पूर्ति की संतुष्टि को प्रदर्शित करती है एवं स्वप्न का सार इच्छाओं की पूर्ति है।
मूलप्रवृत्ति	: व्यक्तित्व को ढलने अथवा प्रेरित करने की शक्तियाँ। आन्तरिक शक्तियाँ जो मानसिक ऊर्जा को छोड़ती हैं, व्यक्ति को कुछ

निश्चित क्रिया करने के लिए चालित करता है।

- जीवन मूलप्रवृत्ति** : इसमें भूख, प्यास, काम (सेक्स) एवं अपने बचाव से सम्बन्धित शक्तियाँ निहित होती हैं। जीवन बचाने की अपेक्षा ये रचनात्मक शक्तियाँ हैं।
- मृत्यु मूलप्रवृत्ति** : विनाशकारी शक्तियाँ जो आन्तरिक रूप से आत्महत्या के लिए अथवा वाहस्यरूप से घृणा एवं क्रोध के लिए निर्देशित करती हैं।
- अचेतन** : मानव मन का वह भाग जिसमें विचार, इच्छाएँ एवं आवेग बड़े रूप में जागरूक नहीं रहते हैं। यद्यपि इसमें की कुछ सामग्रियाँ हमेशा अचेतन में होती हैं, फ्रायड का विश्वास है कि इसमें से अधिकांश चेतन में आता है परन्तु वह क्रियात्मक रूप से दमित हो जाता है, यह चेतनावस्था से चालित होता है, क्योंकि चिन्ता उत्पन्न करने वाला होता है।
- उपाहं** : मोटे तौर पर यह फ्रायड के पहले के अचेतन के विचार से सम्बन्धित है, जो बहुत अधिक प्रीमिटिव है और कम से कम व्यक्तित्व तक पहुँचने/को चलाने वाला भाग है। उपाहं के शक्तिशाली बलों में लैंगिकता एवं क्रोध की मूलप्रवृत्तियाँ निहित होती हैं। उपाहं निर्णय के मूल्य को अच्छे, बुरे एवं नैतिकता को नहीं जानती। उपाहं बिना वास्तविकता की स्थितियों को जाने तुरन्त संतुष्टि खोजने का प्रयास करती है, जो खुशी /सुख के सिद्धान्त के अनुसार संचालित होती है, जिसका सम्बन्ध खुशी को खोजकर तनाव को कम करना होता है।
- अहम्** : यह उपाहं एवं बाह्य संसार के मध्य की अन्तर्क्रिया को सरल बनाने के लिए मध्यस्थ एजेन्ट का कार्य करता है। अहम् कारण अथवा तर्क को प्रदर्शित करता है, उपाहं की अविचारशीलता के विपरीत, उपाहं वास्तविकता के प्रति जागरूक हुए बिना पूरी तरह से लालचित होता है। अहम् वास्तविकता के प्रति जागरूक होता है, उसमें प्रहस्तन करता है तथा उसके अनुसार उपाहं को संचालित करता है। अहम् वास्तविकता सिद्धान्त का अनुसरण करता है, उपाहं की सुख प्राप्ति के माँग को तब तक रोके रखता है जब तक कि आवश्यकता एवं चिन्ता की संतुष्टि को कम करने का उचित वस्तु नहीं मिल जाता।
- पराहं** : यह जीवन के प्रारम्भ में विकसित होता है जब बच्चा माता-पिता अथवा संरक्षण देने वालो द्वारा सिखाए गये आचार व्यवहार को पुरस्कार एवं दण्ड प्रणाली द्वारा दिये गये नियमों को आत्मसात करता है। पराहं नैतिकता को प्रदर्शित करता है तथा पूर्णता के प्राप्ति की वकालत करता है।
- चिन्ता** : यह चेताने के रूप में कार्य करता है कि अहम् को धमकाया जा रहा है। फ्रायड ने तीन प्रकार की चिन्ता का वर्णन किया - वस्तुगत, तंत्रिकातापी एवं नैतिक। वस्तुगत चिन्ता की उत्पत्ति

वास्तविक संसार के वास्तविक भय के कारण होती हैं। तंत्रिकातापी चिन्ता की उत्पत्ति आन्तरिक उपाह की शक्ति को पूरा करने की पहचान के कारण होती है। नैतिक चिन्ता अपने विवेक के भय के कारण उत्पन्न होती है।

रक्षा युक्तियाँ : वास्तविकता को अचेतन द्वारा नकारना अथवा विकृत करना। ये व्यवहार के वे तरीके हैं जो प्रतिदिन के जीवन में चिन्ता द्वारा उत्पन्न द्वंद्व से बचने के लिए किये जाते हैं।

मनोलैंगिक अवस्थाएँ : आन्तरिक रूप से निर्धारित लैंगिक विकास की अवस्थाएँ, जिसके द्वारा सम्भवतः प्रत्येक व्यक्ति गुजरता है, एवं जो मजबूत ढंग से व्यक्तित्व के स्वरूप को आकार देता है।

लिबिडो : मूलप्रवृत्त्यात्मक जीवन शक्ति जो उपाह को ऊर्जा देता है।

स्थायीकरण : यदि लिबिडो ऊर्जा का अधिक योगफल (एमाउन्ट) किसी विशेष मनोलैंगिक अवस्था से बंधा होता है, वह स्थायीकरण की तरफ बढ़ता है। उस अवस्था के दौरान स्थायीकरण की जड़े या तो बहुत कम अथवा बहुत अधिक संतुष्टि करती है, किसी भी अवस्था में परिणाम दुःखद होता है।

6.10 पुनरावलोकन प्रश्न

- 1) औपचारिक रूप से मनोविश्लेषण का प्रारम्भ वर्ष में हुआ।
- 2) अचेतन मन के सिद्धान्तकार जिन्होंने फ्रायड को बहुत अधिक प्रभावित किया था है एवं।
- 3) मनोलैंगिक विकास की विभिन्न अवस्थाएँ..... एवं हैं।
- 4) फ्रायड ने सम्मोहन को एक विधि के रूप में कैसे प्रारम्भ किया?
- 5) फ्रायड ने सम्मोहन की अपेक्षा विरेचन को अधिक महत्वपूर्ण क्यों पाया?
- 6) फ्रायड के अनुसार स्वतंत्र साहचर्य की विधि किस प्रकार उपयोगी है?
- 7) मनोविश्लेषण की प्रथम पुस्तक का नाम बताइए।
- 8) मनोविश्लेषण में मूलप्रवृत्ति की क्या भूमिका है?
- 9) उपाह, अहम् एवं पराह के मध्य अतःक्रिया की विवेचना कीजिए।
- 10) चिन्ता के क्या कार्य हैं?
- 11) रक्षा युक्तियों का क्या उद्देश्य है?
- 12) आँकड़ा संकलन को लेकर फ्रायड के प्रति मुख्य आलोचना क्या है?
- 13) कला एवं साहित्य पर मनोविश्लेषण के प्रभाव की विवेचना कीजिए।

6.11 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

Brennan, J. F. (2014). *History and Systems of Psychology*. Harlow: Pearson Education Ltd.

Glassman, W. E. & Hadad, M. (2009). *Approaches to Psychology*. London: McGraw-Hill Education

Hergenhahn, B. R. & Henley, T. B. (2009). *An Introduction to the History of Psychology*. Wadsworth: Cengage Learning

Leahy, T. H. (2014). *A History of Psychology: From Antiquity to Modernity*. Harlow: Pearson Education

Schultz D. P. & Schultz, S. E. (2008). *A History of Modern Psychology*. Wadsworth: Thomson Learning, Inc

6.12 चित्रों के संदर्भ

American Medical Association (2010). Clark University Vicennial Conference on Psychology and Pedagogy, Archives General Psychiatry, 67 (3) <http://www2.clarku.edu/departments/psychology/pdfs/ClarkUinAGP.pdf>

Bradford, A. (2016). Sigmund Freud: Life, Work, and Theories. <https://www.livescience.com/54723-sigmund-freud-biography.html>

6.13 ऑनलाइन संसाधन

Farooqi, S. (2018). Sigmund Freud in the Present-Day: Contemporary Research in Freudian Psychoanalysis. <http://www.historyofpsychology.net/2018/06/sigmund-freud-in-present-day.html>

Farooqi, S. (2020). The Common Origins of Wundtian Psychology and Freudian Psychoanalysis. <http://www.historyofpsychology.net/2020/03/the-common-origins-of-wundtian.html>

Freud Museum London (2018). Who was Sigmund Freud? <https://www.freud.org.uk/education/resources/who-was-sigmund-freud/>

Jay, M. E. (2020). Sigmund Freud <https://www.britannica.com/biography/Sigmund-Freud/Psychoanalytic-theory>

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2020). Psychoanalysis <https://www.britannica.com/science/psychoanalysis>

- 1) 1895 ।
- 2) गाटफ्रीड विलहेल्म लाइबनिज, जोहानफ्रेडरिक हर्बट, एवं गुस्टाव थ्योडोर फेकनर ।
- 3) मुखावस्था, गुदावस्था, शिश्नावस्था, अव्यक्तावस्था एवं जनेन्द्रियावस्था ।



ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 7 नव-फ्रायडवादी*

संरचना

- 7.0 प्रस्तावना
- 7.1 कार्ल गुस्ताव युंग
 - 7.1.1 मन की संरचना
 - 7.1.2 आद्यप्ररूप एवं समक्रमिकता
 - 7.1.3 अभिवृत्ति एवं कार्य : मनोवैज्ञानिक प्रकार
 - 7.1.4 तुल्यता एवं एन्ट्रोपी का नियम
 - 7.1.5 व्यक्तित्व विकास
- 7.2 अल्फ्रेड एडलर
 - 7.2.1 हीनता-श्रेष्ठता
 - 7.2.2 कल्पित लक्ष्य
 - 7.2.3 सामाजिक अभिरुचि
 - 7.2.4 जीवन शैली
 - 7.2.5 सर्जनात्मक शक्ति
 - 7.2.6 जन्म क्रम
- 7.3 केरेन हार्नी
 - 7.3.1 मूल चिन्ता एवं मूल विद्वेष
 - 7.3.2 मनस्तापी आवश्यकताएँ
 - 7.3.3 चिन्ता को कम करने के प्रयास
- 7.4 एरिक एरिकसन
 - 7.4.1 जीवन चक्र : मनोसामाजिक विकास की आठ अवस्थाएँ
- 7.5 हैरी स्टैक सुल्लीवान
 - 7.5.1 व्यक्तित्व की गतिकी
 - 7.5.2 अन्तर्वैयक्तिक स्थितियों के लिए आद्य प्ररूप के रूप में पोषण
 - 7.5.3 आत्म का मानवीकरण
 - 7.5.4 विकासात्मक अवस्थाएँ
- 7.6 एरिक फ्रोम
 - 7.6.1 स्वतन्त्रता से पलायन
 - 7.6.2 मूल आवश्यकताएं
 - 7.6.3 व्यक्तित्व प्रकार
- 7.7 निष्कर्ष
- 7.8 सारांश
- 7.9 मुख्य शब्द

*ब्रुशाली पाठक, शोधार्थी, मनोविज्ञान विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

7.10 पुनरावलोकन प्रश्न

7.11 सन्दर्भ एवंपढ़ने के सुझाव

7.12 ऑनलाइन संसाधन

सीखने के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप सक्षम होंगे :

- व्यक्तित्व सिद्धांत में फ्रायडवादियों के योगदान को संक्षेप में बताने में;
- युंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की व्याख्या करने में;
- एडलर के व्यक्तिगत मनोविज्ञान पर चर्चा करने में;
- हार्नी के मनोविश्लेषणात्मक अंतवैयक्तिक में अंतर करने में;
- फ्रोम के मनोविश्लेषणात्मक सामाजिक मनोविज्ञान को जानने में;
- एरिकसन के विकास के मनोसामाजिक सिद्धांत का परीक्षण करने में;
- सुल्लीवान का अन्तरवैयक्तिक सिद्धांत की व्याख्या कर सकेंगे।

7.0 प्रस्तावना

सिगमंड फ्रायड ने मनोविज्ञान के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर योगदान दिया है और इस प्रकार अपने कई अनुयायियों को आकर्षित किया है। हालांकि कामुकता पर अत्यधिक बल देने के लिए उनकी बहुत आलोचना हुई। वर्षों से कई अन्य सिद्धान्तवादी, जो फ्रायड के सिद्धान्त के प्रति आकर्षित थे, ने व्यक्तित्व एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में योगदान देने के लिए अपने विचारों को अनुकूलित किया और प्रस्तुत किया। इन सिद्धान्तवादियों को नव-फ्रायडवादी के रूप में संदर्भित किया गया था। जिन्होंने बचपन के अनुभवों के महत्व पर फ्रायड के साथ सहमति व्यक्त की लेकिन कामुकता पर जोर कम कर दिया। उनका ध्यान समग्र (फ्रायड की तुलना में) था क्योंकि उन्होंने किसी व्यक्ति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों को ध्यान में रखा था। इस इकाई में हम इनमें से कुछ नव-फ्रायडवादियों पर चर्चा करेंगे।

7.1 कार्ल गुस्ताव युंग

कार्ल युंग ज्यूरिख में मनोचिकित्सक के रूप में काम कर रहे थे, जब वह *स्वपनों की व्याख्या* को समझना। वह अवधारणाओं से बहुत प्रभावित थे एवं उन्होंने फ्रायड के साथ अपने कार्य एवं लेखन को साझा करना शुरू कर दिया, जिसने दोनों के मध्य एक नियमित पत्राचार को चिन्हित किया। 7 अप्रैल, 1907 को फ्रायड ने युंग को लिखा, "कि आपने मुझे भविष्य के लिए आत्मविश्वास के साथ प्रेरित किया है, कि अब मुझे एहसास है कि मैं बाकी सभी की तरह मेरा भी स्थान लिया जा सकता है और मैं आपसे अच्छा कार्य करने की आशा नहीं कर सकता, जैसा कि मैंने आपको समझा है कि आप मेरे कार्य को निरंतर चलाते हुए उसे पूरा करेंगे (फ्रायड/युंग 1974, पृष्ठ 27)। इस प्रकार फ्रायड ने युंग को अपना अकादमिक उत्तराधिकारी बनाने का निर्णय किया। लेकिन धीरे-धीरे व्यक्तिगत होने के साथ-साथ दोनों के मध्य सैद्धान्तिक मतभेद

दूर होने लगे। वर्ष 1913 में उनके पत्राचार और सम्बन्ध समाप्त हो गए। बाद में, युंग ने अपने स्वयं के स्कूल की स्थापना की और इसे **विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान** कहा। निम्नलिखित अनुभाग में, हम युंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के सिद्धांतों और योगदान को रेखांकित करेंगे।

7.1.1 मन की संरचना

व्यक्तित्व के लिए युंग का दृष्टिकोण फ्रायड के दृष्टिकोण से अलग था, क्योंकि उनका मानना था कि मुख्य रूप से उन कल्पनाओं और स्वप्नों के निर्माण की व्याख्या करना था, जो प्रतीकों एवं विषयों का अनुकरण करते हैं जो किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत अनुभव से अधिक है। इस प्रकार, व्यक्तित्व को तीन प्रमुख क्षेत्रों में विभाजित किया गया था – चेतन अहं, व्यक्तिगत अचेतन एवं सामूहिक अचेतन।

चेतन अहं

व्यक्तित्व के चेतन भाग के रूप में कार्य करते हुए, अहं में प्रत्यक्षण, स्मृतियां, विचार एवं भावनाएँ शामिल हैं। किसी व्यक्ति की आत्म-जागरूकता, पहचान एवं निरंतरता में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह मोटे तौर पर अहं की फ्रायडवादी अवधारणा से मेल खाती है।

व्यक्तिगत अचेतन

यह फ्रायड के उस अचेतन के समान है। लेकिन युंग ने कुछ और विशेषताओं की चर्चा की और इन्हें शामिल किया। जिसके कारण असावधानी या उपयोग में कभी जागरूकता का हिस्सा नहीं है, परन्तु इच्छाशक्ति के प्रति सचेत हो सकती है। इसमें ऐसे अनुभव भी हो सकते हैं जो कभी चेतन थे, अपनी तीव्रता को भूल गए, दबा दिए गए या अनदेखा कर दिये गये और खो गए। इसमें ऐसे विचार एवं आवेग भी शामिल हैं जिन्हें चेतन से सक्रिय रूप से वापस लिया जा सकता है। इसमें ऐसे उद्देश्य शामिल थे, जो व्यक्ति के अहं के लिए अस्वीकार थे। युंग के लिए *अचेतन प्रकृति में पूर्वव्यापी* और संभावित दोनों हैं। इस प्रकार, अतीत एवं भविष्य की प्रत्याशा दोनों के लिए उन्मुख है (युंग, 1916)। अचेतन तक प्रतिपूरक कार्य के रूप में भी कार्य करता है। यदि किसी व्यक्ति का दृष्टिकोण एक दिशा में बहुत अधिक झुकता है, तो अचेतन व्यक्ति कल्पनाओं एवं स्वप्नों का उत्पादन करके इसकी भरपाई कर सकता है और इसे संतुलित करने की विपरीत पद्धति पर बल देता है (युंग, 1916)।

सामूहिक अचेतन

सामूहिक, या पारवैयक्तिक अचेतन वह स्तर है जो व्यक्तिगत अचेतन की तुलना में अधिक गहरा होता है। सामूहिक अचेतन युंग का सबसे महत्वपूर्ण परन्तु विवादस्पद सम्प्रत्यय है। यह "कुछ व्यक्तिगत से अलग है और सभी पुरुषों के लिए आम है, क्योंकि इसकी मौजूदगी हर जगह पाई जा सकती है" (युंग, 1917, पृष्ठ 66)। यह पूर्वजों के अतीत से विरासत में मिली छवियों एवं विचारों का भण्डार है, जिसमें मनुष्यों के नस्लीय इतिहास और उनके पूर्व-मानव और पशु वंश शामिल हैं (हॉल, लिंडजे, और कैम्पबेल, 1957)। इन प्रधान छवियों को, जिसे आदिरूप के रूप में जाना जाता है, को विशेष रूप से कुछ बाहरी घटनाओं का जवाब देने के लिए पूर्वसूचनाएँ, एवं कुछ दिशाओं में अनुभव को आकार देने की क्षमता है (युंग, 1936, पृष्ठ 66)। इस प्रकार, वे

वर्तमान अनुभवों के लिए लचीला टेम्पलेट या मॉडल बन जाते हैं और बाहरी दुनिया-व्यक्तिगत अचेतन के साथ एक व्यक्ति की अन्तः क्रियाएं के स्तर को आकार देते हैं।

व्यक्तिगत एवं सामूहिक अचेतन मन के दो अचेतन क्षेत्र हैं जो मनुष्यों के लिए अति महत्वपूर्ण हैं। “यह (अचेतन) संभावनाएं रखता है जो चेतन मन से परे हैं क्योंकि इसके निपटान में सभी अचेतन सामग्री, सभी चीजें हैं जो भुला दिया गया है या अनदेखा कर दिया गया है, साथ ही साथ अनगिनत शताब्दियों के ज्ञान एवं अनुभव को भी, जो इसके चिर स्थायी अंगों में रखा गया है” (युंग, 1953, पृष्ठ 114)। युंग ने चर्चा की थी कि अहं द्वारा अचेतन के ज्ञान की अज्ञानता के परिणामस्वरूप जागरूक प्रक्रियाओं का विरूपण हो सकता है। अचेतन प्रक्रियाओं की यह हार या उपेक्षा, फोबिया, भ्रम और अन्य तर्कहीनता जैसे लक्षणों का कारण बन सकती है।

आद्यप्ररूप

आद्यप्ररूप सामूहिक अचेतन के संरचनात्मक कारक है। उन्हें आदिकालीन प्रतिमाएँ अथवा पौराणिक प्रतिमाएं कहा गया। यह पीढ़ी दर पीढ़ी बार-बार होने वाले अनुभवों के लिए एक स्थायी भंडार है। उदाहरण के लिए, कई पीढ़ियों ने सूर्य के उदय और फिर अस्त होने की घटना को देखा है। युंग के अनुसार, इस शानदार घटना की पुनरावृत्ति सामूहिक अचेतन ये सूर्य-देवता के प्रतीक के रूप में समय के साथ तय हो गई। यह आद्य प्ररूप अपने आप में शक्तिशाली, प्रभुत्वशाली, प्रकाश देने वाले शरीर का प्रतीक है जिसे लोग या तो उपेक्षा करने लगे या पूजा करने लगे। सामूहिक अचेतन में आद्य प्ररूप पैतृक भावनात्मक जीवन के अवशेष हैं (युंग, 1917)।

ये वास्तविक शारीरिक अनुभव स्मृतियाँ नहीं हैं, बल्कि दोहराया जाने वाले व्यक्तिपरक भावनात्मक प्रक्रियाएं हैं जो मानव अचेतन मानसिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करती हैं। युंग ने बाल-देवता, माँ, चालबाज या जादूगर, नायक, पुराने बुद्धिमान व्यक्ति, आदि कई आद्य प्ररूपों की पहचान की थी। हालांकि इनमें से कुछ अलग-अलग प्रणालियों के व्यक्तित्व के रूप में विकसित हुए (हॉल, लिन्डेस एवं कोम्पबेल, 1957)। वे हैं : परसोना, एनीमा एवं एनीमस, और छाया।

परसोना : यह वह मुखौटा है जो व्यक्ति समाज की जरूरतों एवं आवश्यकताओं के अनुसार पहनता या अपनाता है, हम अन्य के समक्ष वैसा ही अभिनय करते हैं जैसा कि एक समाज हमसे उम्मीद रखता है या चाहता है। इसके साथ बड़ा खतरा मौजूद है “लोग वास्तव में जो विद्यमान है पर विश्वास कर रहे कि वे क्या होने का दावा कर रहे हैं” (युंग, 1917, पृष्ठ 193)। यदि अहं परसोना के साथ बहुत अधिक पहचाना जाता है, तो व्यक्ति उस हिस्से के प्रति अधिक सचेत हो सकता है, जो वह वास्तविक भावनाओं की तुलना में खेल रहा है। इस प्रकार व्यक्ति एक स्वायत्त होने की अपेक्षा समाज का एक मात्र प्रतिबिंब बन जाता है।

एनीमा एवं एनीमस : पुरुष पूर्णतः प्रकृति में पुरुष के ही गुण नहीं रखता है अपितु पुरुष के चरित्र में स्त्री तत्व या अन्तर्ज्ञान होते हैं जो परम्परागत रूप से दमित हैं। इससे अचेतन के भीतर कामेच्छा तनाव का निर्माण हो सकता है। युंग ने प्रस्तावित किया कि एक स्त्री को एक साथी के रूप में देखने के दौरान, एक आदमी अनजाने में खुद के उन दमित स्त्री लक्षणों को दिखा सकता है। पुरुष के सामूहिक अचेतन से स्त्रीत्व की इन अनुमानित प्रतिमाओं को एनीमा कहा जाता है। इसी प्रकार स्त्री को भी एक मर्दाना छवि विरासत में मिली है, जिसे एनीमस कहा जाता है। ये आद्य प्ररूप

प्रत्येक लिंग का विपरीत लिंग के सदस्यों को प्रतिक्रिया देने और समझने के लिए प्रेरित करते हैं और उसके बिना मनुष्य के अधूरे होने का खतरा रहता है।

छाया : वैयक्तिक अचेतन में कुछ अस्वीकार्य एवं दमित उद्देश्य एवं इच्छाएं होती हैं, जो हमारे व्यक्तित्व को अवांछनीय पहलू है। युंग (1948) का मानना था कि छाया आद्य प्रारूप प्रवृत्ति है जो हमें विरासत में मिली है। इसे व्यक्तित्व का “अंधेरा भाग” भी कहा जाता है। जिस पक्ष को हम पहचानना नहीं चाहते हैं। यह आद्य प्रारूप तब प्रकाश में आता है जब हम किसी अन्य व्यक्ति के साथ असहज महसूस करते हैं लेकिन यह निर्दिष्ट करने में असमर्थ हो सकता है कि हमें क्यों उकसाया गया है।

आत्म

आत्म वह है जो व्यक्ति को सम्पूर्णता की ओर प्रेरित करता है और इस प्रकार इसे व्यक्तित्व का मध्य बिन्दु माना जाता है जिसके चारों ओर अन्य सभी प्रणालियों को इकट्ठा किया जाता है, जो व्यक्तित्व को स्थिरता, संतुलन और एकात्मकता के साथ प्रेरित करता है।



चित्र 7.1: क्लार्क विश्वविद्यालय, 1909 में युंग एवं फ्रायड और अन्य साथियों के साथ, गुप फोटो पहली पंक्ति (बाएँ से दायीं ओर) सिग्मंड फ्रायड, जी स्टैनली हॉल, कार्ल युंग, पीछे की पंक्ति में (बाएँ से दायीं ओर) अब्राहम बिल, अर्नेस्ट जोन्स, सैंडर फेरेंकी।

स्रोत : https://en.wikipedia.org/wiki/Carl_Jung

7.1.2 आद्यप्रारूप एवं समक्रमिकता

टाद्यप्रारूप तनाव के समय में अपनी उपस्थिति बनाये रख सकते हैं, भले ही व्यक्ति को चेतन में रहते हुए तनाव महसूस न हो। इसके अलावा, युंग ने सुझाव दिया कि आद्य प्रारूप कार्य-कारण से भी ऊँचा जा सकते हैं। उन्होंने प्रस्तावित किया कि कुछ घटनाएँ कारण और प्रभाव के बजाय अर्थ से सम्बन्धित होती हैं। इन घटनाओं को “सार्थक

संयोग” कहा गया है और इस सिद्धान्त को समक्रमिकता कहा गया (टरनास, 2006, प्रष्ठ 50)। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति बिना किसी हाल के सम्पर्क के किसी अपने सगे-सम्बन्धी का स्वप्न देख सकता है, तथा अगले दिन उसकी मृत्यु की खबर प्राप्त कर सकता है। दो घटनाएँ, स्वप्न और सम्बन्धी की मृत्यु के कारण असंबंधित हैं, क्योंकि स्वप्न रिश्तेदार की मृत्यु का कारण नहीं था लेकिन वे एक सार्थक समानता के माध्यम से सम्बन्धित हैं।

7.1.3 अभिवृत्ति एवं कार्य : मनोवैज्ञानिक प्रकार

युंग व्यक्तित्व के दो महत्वपूर्ण आधार अथवा अभिवृत्ति *बर्हिमुखता* तथा *अन्तर्मुखता* के लिए प्रतिष्ठित हैं। बर्हिमुखता की अभिवृत्ति बाहरी दुनियाँ की ओर होती है व इसमें वस्तुनिष्ठता और आत्मनिष्ठता अधिक होती है। दोनों ही अभिवृत्तियाँ व्यक्ति में मौजूद रहती हैं, परन्तु यह आमतौर पर किसी एक पर हावी है और चेतन है जबकि दूसरा अचेतन है। यहाँ यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि यह विवरण व्यक्ति के आधार से सम्बन्धित है न कि समाजशीलता के स्तर से। जिन तरीकों से लोग सूचनाओं को प्राप्त करते हैं तथा सूचना का संसाधन करते हैं, युंग ने ऐसे दो जोड़ा कार्यों का परिचय दिया। इस प्रकार चार मूलभूत मनोवैज्ञानिक कार्य इस प्रकार हैं -

- *चिन्तन* (बौद्धिक/विचारात्मक कार्य) : विश्व व स्वयं की प्रकृति को समझने में सहायक होता है।
- *भाव* (मूल्यांकन कार्य) : आत्मनिष्ठ अनुभवों जैसे - खुशी, दर्द, डर, एवं क्रोध आदि को जानने में सहायक।
- *संवेदन* (अवधारणात्मक/वास्तविक कार्य) : मूर्त तथ्यों अथवा विश्व का प्रतिनिधित्व समझने में सहायक होता है।
- *अन्तर्ज्ञान* : यह विचारों, भावनाओं एवं तथ्यों से परे है, और अचेतन प्रक्रियाओं या अवसीम सामग्री द्वारा प्रत्यक्षित है।

चिन्तन एवं भाव को एक साथ तर्कसंगत प्रक्रिया माना गया है, जैसा कि इसमें अमूर्तता, कारक तथा निर्णय शामिल होते हैं। दूसरी ओर संवेदन एवं अन्तर्ज्ञान, तर्कहीन कार्यों के रूप में माना गया है क्योंकि वे मूर्त एवं आकस्मिकता की धारणा पर आधारित होते हैं। आमतौर पर चारों में से एक अन्य तीन की तुलना में अत्यधिक भिन्न होता है और चेतन प्रक्रियाओं में इसकी मुख्य भूमिका होती है। इसे श्रेष्ठ कार्य के रूप में जाना गया है। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि युंग का व्यक्तित्व प्ररूपविज्ञान की व्याख्या पारस्परिक रूप से अनन्य, सकल वर्गीकरण नहीं है, बल्कि कार्यों, दृष्टिकोणों एवं स्तर के विभिन्न क्रम-परिवर्तन की अनुमति है।

7.1.4 तुल्यता एवं इन्द्रोपी का नियम

युंग का मनोगत्यात्मक दृष्टिकोण दो मूल नियमों पर आधारित है : तुल्यता एवं इन्द्रोपी। तुल्यता का नियम, जैसा कि मानसिक कार्यप्रणाली पर लागू होता है, यदि कोई विशेष मूल्य कमजोर होता है या बिगड़ता है, तब उस मूल्य द्वारा दर्शायी गई ऊर्जा का योग व्यक्ति के मन से पूर्णतः नहीं हटेगा, लेकिन कुछ अन्य नये मूल्यों का पुनर्निर्माण करेगा। इस प्रकार ऊर्जा परिवर्तित तो हो सकती है परन्तु लुप्त नहीं हो सकती है। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति ने शौक में रुचि खो दी हो, तब उसने

अपने अन्दर एक अन्य रुचि की पैदा की होगी। इस बात की संभावना है कि एक लड़का जो किसी लड़की की ओर आकर्षित होता है, हो सकता है कि वह अपनी ऊर्जा का उपयोग कर रहा हो, जिसे वह पहले किसी विशेष शौक पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए कर रहा था। यह भी संभव है कि एक मूल्य से लुप्त हुई ऊर्जा कई अन्य दूसरे मूल्यों में वितरित हो सकती है।

इन्द्रोपी का नियम जैसा कि युंग ने अपनाया कि संतुलन या संतुलन हासिल करने की दिशा में मन को विभिन्न प्रणालियों में एक ही प्रवृत्ति है। इस प्रकार यदि असमान सामर्थ्य के दो मूल्य हैं, तो ऊर्जा एक मजबूत संतुलन तक कमजोर मूल्य से होकर गुजरती है। व्यक्तित्व में बलों का एक स्थायी संतुलन कभी स्थापित नहीं किया जा सकता है क्योंकि ऊर्जा या तो संकलित है या घटती है, जिससे संतुलन बिगड़ जाता है। सही संतुलन एक आदर्श स्थिति है और आत्म में विद्यमान है।

7.1.5 व्यक्तित्व विकास

युंग द्वारा व्यक्तित्व विकास के परिप्रेक्ष्य में दो महत्वपूर्ण बिन्दुओं पारस्परिकता एवं पारलौकिक कार्यकी चर्चा हुई- उन्होंने व्यक्तित्व विकास की अवस्थाओं को चार मूल अवस्थाओं में विभाजित किया - बाल्यावस्था, युवावस्था, मध्यावस्था एवं वृद्धावस्था। उन्होंने मध्यम आयु या जीवन के दूसरे छमाही (मध्य-जीवन) पर अधिक बल दिया। इस स्तर पर, उनका मानना था कि व्यक्तियों के पास व्यक्तित्व के एक मुख्य लक्ष्य को पूरा करने का पर्याप्त अवसर है - आत्म बोध। वैयक्तिकता अपने मूलरूप में एक सम्पूर्ण व्यक्ति या व्यक्ति बनने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है। उत्कृष्ट कार्य सामान्य विकास से परे जाने और समरसता में व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को साथ लाने के लिए जाना जाता है। इस प्रकार यहाँ तक कि चेतन एवं अचेतन सामग्री को एकीकृत करता है।

मनोवैज्ञानिकों द्वारा मनोग्रन्थियों, मानसिक ऊर्जा जैसी अवधारणाओं की आलोचना की गई है, लेकिन मनोविज्ञान के क्षेत्र में युंग के प्रभाव को कोई भी नहीं नकार सकता है और न ही इस हद तक कि उन्होंने कई और सिद्धान्तवादियों और सैद्धांतिक अवधारणाओं को प्रेरित किया है, जो हमारे लिए क्षेत्र का एक और पक्ष खोलना।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 1

1) युंग के अनुसार सामूहिक अचेतन संकल्पना की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) आद्यप्ररूप को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

की भरपाई कर सकता है क्योंकि व्यक्ति मुख्य रूप से उसके कार्य पर ध्यान केन्द्रित करता है (एडलर, 1907)। उदाहरण के लिए, एक बच्चे के रूप में भाषण या बोलने में कमी होने पर एक व्यक्ति बोलने की कमी पर काबू पाने के लिए इतना उग्र हो सकता है कि वह एक अभिनेता, संचालक या शायद एक वाक् चिकित्सक जैसे व्यवसाय में अपनी हीनता को बदल सकता है। जैसे, ग्लेन कनिहाम पैर में गंभीर चोट के साथ एक अच्छे धावक बन गए।

इस अवधारणा पर जोर देते हुए एडलर ने कहा कि हीनता की भावना वास्तविक शारीरिक कमजोरी से बढ़ सकती है और यह मनोवैज्ञानिक रूप से मनोवैज्ञानिक या सामाजिक विकलांगताओं से भी उपजी हो सकती है। उन्होंने कहा कि हीनता की भावना असमान्यता का संकेत नहीं है, बल्कि मनुष्यों में सभी सुधारों का कारण है।

आक्रामकता प्रणोद

एडलर (1908) ने प्रस्तावित किया कि व्यक्ति के जीवन की कार्यप्रणाली को नियंत्रित करने वाले दो मूल प्रणोद कामकुता प्रणोद एवं आक्रामकता हैं। इन विभिन्न गौण प्रणोदों के साथ-साथ विभिन्न संवेदी प्रक्रियाएँ भी व्यक्ति के व्यवहार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यहाँ यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि कोई प्रणोद खुद अकेले उत्पन्न नहीं होता। इन प्रणोदों को विस्थापित किया जा सकता है। अपने मूल रूप से परिवर्तित किया जा सकता है और नये तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है (मोंटे, 1995)। इस प्रणोद की वास्तविक अभिव्यक्ति लड़ाई, काटना, क्रूरता आदि के रूप में स्थान ले सकती है, परन्तु यह कम प्रत्यक्ष रूप भी ले सकती है। जब आक्रामकता प्रणोद अन्दर की ओर मुड़ जाता है, तब व्यक्ति कुछ मामलों में विनम्रता, आज्ञानुकूलता अथवा परपीड़न जैसे विपरीत लक्षण प्रदर्शित कर सकता है। इसलिए यहाँ मूल विचार यह है कि विद्वेष अभिवृत्ति प्रत्यक्षित असहायता प्रति संतुष्टि प्राप्त करने का एकमात्र उपाय है। जो एक विपरीत प्रणोद में बदल सकता है।

पुरुषोचित विरोध

एडलर की धारणा में आक्रामक आवेश को "इच्छा शक्ति" द्वारा बदल दिया गया था। एडलर का मानना था कि बच्चा जीवन की शुरुआत इस विश्वास के साथ करता है कि वह शक्तिहीन, कमजोर व आश्रित है (एडलर, 1927)। बालक यह महसूस करता है कि दो चीजे हैं जो उसकी शक्ति में है - अपने बड़ों की प्रसन्नता एवं अप्रसन्नता। एडलर ने "पुरुषत्व" एवं "स्त्रीत्व" के साथ शक्ति एवं कमजोरी की पहचान की। एक पुरुषोचित विरोध" अपनी निर्भरता और मुखर स्वायत्ता को खत्म करने के लिए, श्रेष्ठता के लिए प्रतिपूरक प्रयास है। पुरुष एवं स्त्री दोनों इसमें तब संलग्न होते हैं, जब वे खुद को हीन एवं कमजोर महसूस करते हैं। इस प्रकार हर कोई श्रेष्ठ के विरोध में संलग्न है। एडलर ने इस घटना को "पुरुषोचित विरोध" नाम देने का चयन करते हुए ऐतिहासिक क्षण के समक्ष मान गए और स्त्रीत्व के साथ श्रेष्ठता एवं पुरुषत्व की पहचान हीनता के साथ की।

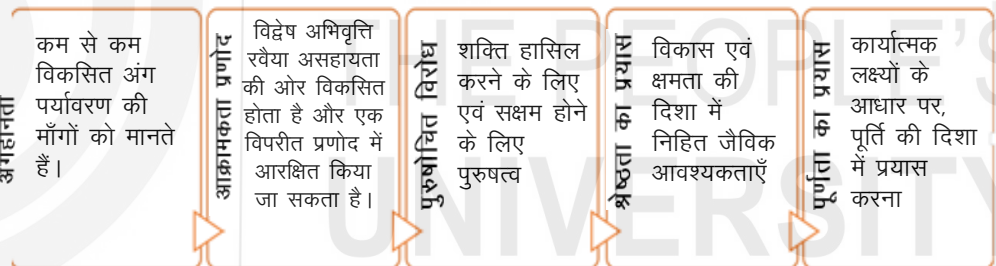
श्रेष्ठता का प्रयास

श्रेष्ठता के लिए प्रयास अथवा उच्च आत्म-समान की आवश्यकता दो चरणों की प्रक्रिया है। पहले चरण में, व्यक्ति की जैविक विकलांगता या उसके आसपास के वयस्कों के साथ हीनता की भावना, असुरक्षा, लघुता और समयबद्धता की भावनाओं को जन्म देती

है। दूसरे चरण में श्रेष्ठता के लिए प्रयास करते हैं, स्वायत्ता हीनता की भावनाओं के लिए क्षतिपूर्ति करती है। पुरुषोचित विरोध के प्रतिपूरक लक्षणों को अभिनेता/व्यक्ति की दोष को छुपाने वाले मुखौटा के रूप में देखा जा सकता है। एडलर ने स्पष्ट किया कि श्रेष्ठता से उनका अर्थ सामाजिक भेद, नेतृत्व आदि से नहीं था।

7.2.2 कल्पित लक्ष्य

हंस वाहिंगर ने एक पेचीदी धारणा का प्रस्ताव दिया कि मुख्य विभिन्न काल्पनिक विचारों से प्रभावित होते हैं, जिनका आमतौर पर वास्तविकता में कोई प्रतिपक्ष नहीं होता है। इस प्रकार हम केवल वास्तविक होने पर भी विश्वास करते हैं। एडलर के अनुसार, हम एक काल्पनिक लक्ष्य बनाते हैं, एक व्यक्तिपरक मार्गदर्शन आदर्श जो हमारे दोषों की महारत का प्रतिनिधित्व करता है। यह काल्पनिक आदर्श बन जाता है जिसके चारों ओर हमारे जीवन की सभी कल्पनाएँ निर्देशित होती हैं। बाद में काल्पनिक शब्द को हटा दिया गया था, लेकिन अन्तिम लक्ष्य को तीन पहलुओं से नियंत्रित किया गया : यह व्यक्तिपरक और व्यक्तिगत रूप से सार्थक है, यह व्यक्ति द्वारा अस्तित्व की बाधाओं को निर्देशित करने के लिए बनाया गया है, और यह प्रकृति में अचेतन है (अंशवेचर एवं अंशवेयर, 1956)। इस तरह के काल्पनिक अंतिम लक्ष्य का बहुत महत्व है क्योंकि यह व्यक्तिगत में एकीकरण लाया है। यह सिर्फ एक आदर्श हो सकता है लेकिन मानव व्यवहार और आचरण के लिए जिम्मेदार बनाने की कोशिश करता है। एडलर का मानना था कि श्रेष्ठता या पूर्णता के लिए प्रयास प्रकृति में जन्मजात है। एक विक्षिप्त व्यक्ति भी शक्ति एवं आत्म सम्मान के लिए प्रयास कर सकता है, जो स्वभाव से सामाजिक है।



चित्र 7.2 : अंग हीनता से पूर्णता के प्रयास पूर्ण परिवर्तन करने के लिए

7.2.3 सामाजिक अभिरुचि

यह वास्तव में सामाजिक अभिरुचि है, जो किसी व्यक्ति को स्वस्थ तरीके से सफलता एवं श्रेष्ठता के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है। एडलर द्वारा इस्तेमाल किया गया मूल शब्द एक जर्मन शब्द था *जैमिन्सचैफेत्सेफुल* और सामाजिक अभिरुचि इसका अनुमानित अंग्रेजी अनुवाद है। इसे अन्य पुरुष अनुयायियों के लिए सहानुभूति के साथ-साथ चिन्ता, मानवता की देखभाल के दृष्टिकोण के रूप में परिभाषित किया गया है। यह प्रकृति में भी जन्मजात माना जाता है, लेकिन मार्गदर्शन और प्रशिक्षण द्वारा इसे भौतिक बनाना पड़ता है। एडलर ने तीन सार्वभौमिक जीवन समस्याओं (व्यावसायिक कार्य, सामाजिक कार्य और प्रेम कार्य) पर चर्चा की थी जो प्रत्येक व्यक्ति को निपुण होना चाहिए और मजबूत सामाजिक अभिरुचि के साथ सफलतापूर्वक हल कर सकता है। इस प्रकार, स्वस्थ सामाजिक अभिरुचि वाले व्यक्ति का दृष्टिकोण

है : "दूसरे की आँखों से देखना, दूसरे के कानों से सुनना और दूसरे दिल के साथ महसूस करना" (एडलर, 1956, पृष्ठ 1335)।

7.2.4 जीवन शैली

जीवन शैली एडलर के मनोविज्ञान का एक मुख्य आदर्श सिद्धान्त हैं। यह किसी विशेष लक्ष्य पर पहुंचने के लिए किसी व्यक्ति की विशिष्टता की व्याख्या करता है। यह कई शक्तियों जैसे आनुवंशिकता, पर्यावरण, सामाजिक अभिरुचि आदि का उत्पाद है। कोई भी दो व्यक्ति एक ही समान शैली विकसित नहीं करते। प्रत्येक व्यक्ति श्रेष्ठ बनने का प्रयास करता है लेकिन एक कोई विकसित बुद्धिमता से श्रेष्ठ बनने की कोशिश कर सकता है और अन्य कोई मजबूत माँसपेशियाँ होने के कारण श्रेष्ठ बनने का प्रयास कर सकता है। जीवन शैली यह भी निर्धारित करती है कि कैसे व्यक्ति ऊपर दर्शायी गई जीवन की समस्याओं का सामना करता है। जीवन शैली की चार सामान्य अभिवृत्तियाँ निम्न प्रकार प्रस्तावित की गई हैं :

- अधिकार प्रदर्शित करने वाले प्रकार : गतिविधि में उच्च लेकिन सामाजिक अभिरुचि में निम्न होते हैं, जीवन की समस्याओं को उन पर हावी होकर हल करते हैं।
- प्राप्त करने वाले प्रकार : गतिविधि एवं सामाजिक अभिरुचि दोनों में कम होते हैं, सभी से अपेक्षा करते हैं कि उन्हें उसकी आवश्यकता होगी।
- दूर हट जाने वाले प्रकार : गतिविधि एवं सामाजिक अभिरुचि में कम होते हैं, समस्या से बचने के लिए दूर हट जाना।
- सामाजिक रूप से उपयोगी प्रकार : गतिविधि एवं सामाजिक अभिरुचि दोनों में उच्च होते हैं, उनकी गतिविधियाँ दूसरों की सेवा के लिए समर्पित होती हैं।

7.2.5 सर्जनात्मक शक्ति

जीवन शैली के विकास में सर्जनात्मक शक्ति का अहम् योगदान है। एडलर का विश्वास था कि हम सभी को अपनी जीवन शैली बनाने की पूर्ण स्वतंत्रता है, और इस प्रकार हम इसके लिए जिम्मेदार हैं कि हम कौन हैं और हम कैसे व्यवहार करते हैं। यह सर्जनात्मक आत्म है जो सामाजिक मानकों के अनुसार कार्य करता है और अन्ततः इसे एक गतिशील एवं अद्वितीय व्यक्तित्व में परिवर्तित कर देता है।

7.2.6 जन्म क्रम

एडलर की एक अन्य विख्यात अवधारणा है कि शिशु के जन्म क्रम का व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव पड़ता है। उन्होंने चार प्रकार के जन्म क्रमों की चर्चा की है:

- प्रथम जन्म (ज्येष्ठ) : प्रथम जन्म क्रम वाला शिशु जब तक अपने पसंदीदा जीवन को जीता है, जब तक कि उसके बाद वाले भाई या बहन का जन्म नहीं होता है। अन्ततः ऐसा बालक यह सीखता है कि माँ बहुत व्यस्त है एवं अलगाव के लिए खुद को प्रशिक्षित करती है। वे किसी के स्नेह के बिना अकेले एवं स्वतंत्र रूप से जीवन जीना सीख सकते हैं। एक अच्छा एवं स्वस्थ परिणाम यह होगा कि परिवार के छोटे बच्चों के प्रति माता-पिता उनके ध्यान में रहें और इस प्रकार उनके मददगार बनें।

- द्वितीय जन्म : द्वितीय क्रम वाला शिशु एक ऐसी दुनिया में जन्मा है जहाँ माँ का ध्यान पहले से ही बंटा हुआ है, परन्तु वह अपने पसंदीदा अस्तित्व को आनन्दपूर्वक जीता है क्योंकि वह समझता है कि उसके पास ज्येष्ठ भाई-बहन के रूप में निर्देशित करने वाला कोई हैं। वे आमतौर पर उपलब्धि उन्मुख होते हैं, विजेता जो अगुआ से आगे निकलने लिए प्रत्यक्ष और यहाँ तक कि भाई-बहन साधनों का उपयोग करते हैं।
- सबसे छोटा शिशु : प्रत्येक सफल शिशु अपने से पहले वाले को राजगद्दी या सत्ता से हटा देता है परन्तु बाद वाला शिशु को उसके परिवारिक लाड-प्यार से वंचित नहीं किया जा सकता है। यह शिशु समस्याग्रस्त बच्चा होने का सबसे बड़ा जोखिम है, लेकिन विभिन्न 'पेसमेकर' (बड़े भाई-बहन) होने के कारण वे सफलता के लिए प्रेरित रहते हैं।
- एकमात्र शिशु : ये शिशु पिता के प्रतिद्वन्दी होते हैं और इनको माता-पिता द्वारा अत्यधिक लाड-प्यार किया जाता है - "अपनी माँ के पल्लू से बंधा हुआ" (एडलर, 1929, पृष्ठ 111)। बाद के जीवन में जब वे ध्यान का केन्द्र नहीं हो सकते हैं, तब उनके लिए यह हानिकारक हो सकता है।

एडलर का मुख्य योगदान एक एकीकृत और समग्र व्यक्तित्व के लिए एक ढांचा प्रदान करना था। यह अधिक आशावादी एवं यथार्थवादी था, जो मानव व्यवहार को आकार देने में सामाजिक बलों के प्रभाव को पहचानता था। उसकी परिकल्पना और अन्तर्दृष्टि को व्यापक क्षेत्र में रखने के लिए, उनका अनुभवजन्य परीक्षण किया जाना चाहिए।

अपनी प्रगति की जांच कीजिए 2

1) पुरुषोचित विरोध क्या है?

.....

.....

.....

.....

2) अल्फ्रेड द्वारा दिए गये सामान्य जीवन शैली अभिवृत्तियों के नाम बताइए।

.....

.....

.....

.....

3) एडलर के जन्म-क्रम के आधार पर सबसे छोटे शिशु के व्यक्तित्व विकास एवं एकमात्र शिशु के माध्य अन्तर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

हार्नी ने 1923 के बाद से शोध पत्रों की एक श्रृंखला प्रकाशित की और फ्रायड की पारंपरिक मनोविश्लेषणवादी विचार रखते हुए मनोविज्ञान के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। एडलर की भांति, उन्हें भी लगा कि लोगों के मध्य फ्रायड के संबंधों की अनदेखी से उन्होंने केवल यौन प्रेरणा और द्वंद पर दोषपूर्ण बल दिया गया था। इस प्रकार, उन्होंने सामाजिक और सांस्कृतिक ताकतों पर बल देने के साथ मनोविश्लेषण के मूल सिद्धांतों को समझाया। फ्रायड के साथ एक बड़ी असहमति जो थी वह 'लिबिडो सिद्धांत: विशेष रूप से "लिंग ईर्ष्या" की अवधारणा पर थी। फ्रायड ने लिंग ईर्ष्या के माध्यम से स्त्रियों की हीनता की भावना को समझाया, लेकिन हार्नी ने इस व्याख्या को पक्षपाती एवं तंत्रिकातापी महिलाओं पर आधारित पाया उनके प्रमुख योगदान नीचे सूचीबद्ध है :



चित्र 7.4: करेन हार्नी
स्रोत :

https://en.wikipedia.org/wiki/Karen_Horney

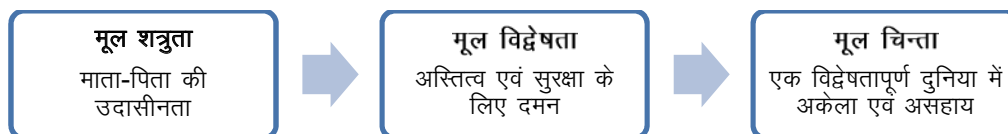
7.3.1 मूल चिंता एवं मूल विद्वेष

हार्नी का विचार था कि प्रत्येक सामान्य और स्वस्थ व्यक्ति में रचनात्मक और सकारात्मक क्षमता होती है। यदि वह प्यार और स्नेह पाता है तब वह अपनी क्षमता को दर्शाता है, प्यार एवं गर्मजोशी के अभाव में परिणामस्वरूप चिन्ता विकसित होती है।

बच्चे के प्रति माता-पिता की निरुत्साह, उदासीन, विद्वेष एवं अस्वीकृत अभिवृत्ति "मूल शत्रुता" है जो अन्ततः "मूल विद्वेषता" को उकसाती है। बालक अपने बड़ों के हाथों अपने साथ अन्याय महसूस करता है और हेराफेरी करने वालों तथा उनके इस व्यवहार का विरोध करता है लेकिन इस प्रकार की विशेषता को प्रकट करने से उसके लिए दण्डात्मक खतरा उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार, बालक विद्वेषता को दमन कर व्यवहार करता है। दमन तीन विधियों द्वारा उत्तेजित होता है (हार्नी, 1937, पृष्ठ 86) :

- "मुझे अपनी विद्वेषता का दमन करना है क्योंकि मुझे आपकी आवश्यकता है"।
- "मुझे अपनी विद्वेषता का दमन करना है क्योंकि मैं तुमसे डरता हूँ"।
- मुझे प्यार खोने के डर के लिए अपनी विद्वेषता का दमन करना है।

जितना अधिक वह अपनी विद्वेषता छिपाता है, उतना ही वह अपनी चिन्ता लोगों और दुनिया के समक्ष प्रदर्शित करने की संभावना रखता है (मोरे, 1995)। चिन्ता स्नेह की आवश्यकता उत्पन्न करती है, लेकिन जब बालक को लगता है कि विद्वेषता एवं चिन्ता दोनों रद्द कर दी गई हैं जो फिर से दमित होने वाली हैं, तब इस प्रकार बालक एक दुष्क्रम में प्रवेश करता है। मूल चिन्ता को 'एक छोटे, तुच्छ असहाय, निर्जन, लुप्तप्राय होने की भावना के रूप में वर्णित किया गया, एक ऐसी दुनिया में जो दुर्व्यवहार, धोखा, हमले, अपमान, विश्वासघात और ईर्ष्या से बाहर है (हार्नी, 1937, पृष्ठ 92)।



चित्र 7.5 : मूल चिन्ता का विकास

7.3.2 मनस्तापी आवश्यकताएं

हार्नी ने दावा किया कि मनस्तापी व्यक्तित्व प्रवृत्तियों की दस आवश्यकताओं में से एक या अधिक द्वारा नियन्त्रित होता है। वे निम्नलिखित हैं (हार्नी, 1942, पृष्ठ 54-60):

- 1) स्नेह एवं अनुमोदन की मनस्तापी आवश्यकता।
- 2) "साथी" के लिए मनस्तापी आवश्यकता जो किसी के जीवन को संभालेगा।
- 3) संकीर्ण सीमाओं में व्यक्ति के जीवन को प्रतिबंधित करने की मनस्तापी आवश्यकता।
- 4) शक्ति तथा दूसरों के ऊपर नियंत्रण और सर्वशक्तिमानता के लिए मनस्तापी आवश्यकता होती है।
- 5) दूसरों का शोषण करने और उनमें से बेहतर बनने के लिए मनस्तापी आवश्यकता।
- 6) सामाजिक पहचान अथवा प्रतिष्ठा के लिए मनस्तापी आवश्यकता।
- 7) व्यक्तिगत प्रशंसा के लिए मनस्तापी आवश्यकता।
- 8) व्यक्तिगत उपलब्धि के लिए मनस्तापी आवश्यकता।
- 9) आत्म निर्भरता एवं स्वतंत्रता के लिए मनस्तापी आवश्यकता।
- 10) पूर्णता के लिए मनस्तापी आवश्यकता।

अपने बाद के लेखों में, हार्नी ने इन दस आवश्यकताओं को तीन शीर्षकों के अंतर्गत वर्गीकृत किया और इस प्रकार इनमें से निम्न व्यक्तित्व प्रकार उभर सकते हैं :

- **लोगों की ओर बढ़ना (अनुपालन)** : यह संकोची समाधान है, उदाहरण के लिए प्रेम की आवश्यकता।
- **लोगों से दूर जाना (अलगाव)** : यह परित्याग का समाधान है, उदाहरण के लिए स्वतंत्रता की आवश्यकता।
- **लोगों के विरुद्ध जाना (आक्रामकता)** : यह प्रशस्त समाधान है, उदाहरण के लिए, शक्ति की आवश्यकता।

एक तथाकथित स्वस्थ और सामान्य व्यक्ति इन तीन प्रकारों को एकीकृतकर इन द्वंद्व समाधान कर सकता है, परन्तु मनस्तापी व्यक्ति एक को स्वीकारता और अन्य दो को अस्वीकार या दमन करता है।

7.3.3 चिन्ता को कम करने के प्रयास करना

यथार्थ एवं आदर्श स्व

बालक को यह एहसास कराया गया है कि किसी को 'वास्तविक आत्म' अप्रिय एवं अयोग्य है। यह ध्यान देना दिलचस्प है कि यह "वास्तविक" आत्म वास्तविक नहीं है, लेकिन दूसरों द्वारा किए गये झूठे मूल्यांकन पर आधारित है। "वास्तविक आत्म" इतना नकारात्मक है कि इसे "तिरस्कृत आत्म" के रूप में भी जाना गया है। मूल चिन्ता को

कम करने के लिए, बालक स्वयं की एक आदर्श प्रतिमा विकसित करता है – “आदर्श आत्म” जो अवास्तविक एवं अतिशयोक्ति है।

सहायक द्वंद्व समाधान

हार्नी ने सुझाव दिया कि स्वयं को “सुरक्षित” करने के लिए विभिन्न गौण तकनीकों को भी मनस्तापी व्यक्तित्व द्वारा नियोजित किया गया। उनमें से कुछ हैं : बाह्यकरण, युक्तिकरण, अंध-बिन्दुओं की उत्पत्ति, वर्गीकरण, अत्यधिक आत्म-नियंत्रण, कपट या छल, मनमाना अधिकार और कुटिलता। हार्नी ने केवल जैविक शक्तियों के बजाय पर्यावरण के सामाजिक और सांस्कृतिक शक्तियों पर बल दिया, इस प्रकार व्यवहार को अधिक समग्र रूप से समझने हेतु अपने दृष्टिकोण को बनाया।

7.4 एरिकएरिकसन

एरिकसन एक मनोविश्लेषक के रूप में प्रशिक्षित थे, उन्होंने फ्रायड के प्रवृत्ति पर व्यापक रूप से कार्य किया और साथ ही साथ मनोसामाजिक पहलुओं पर भी विचार किया। फ्रायड ने मानव व्यवहार को उपाहं (id) अहं (ego) और पराहं (super ego) के जैविक प्रणोद के बीच टकराव का परिणाम बताया जबकि इरिकसन जैसे मनोवैज्ञानिकों ने माना कि व्यवहार उपाहं-अहं-पराहं और बाहर मौजूदा सामाजिक दुनिया के मध्य बातचीत का एक उत्पाद है (मॉटे, 1995)। उन्होंने उपाहं या पराहं से अधिक अहं पर बल दिया और माना कि अहं में सार्थक एवं अनुकूल तरीके से अनुभवों एवं कार्यों को एकजुट करने की क्षमता है। उन्होंने मूल समस्या को यह निर्धारित करने के लिए पहचाना कि कैसे एक व्यक्ति अपनी सामाजिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों को समायोजित करता है। अपने जीवन जैविक एवं सामाजिक जीवों द्वारा उत्पन्न संकटों की प्रतिक्रिया के रूप में, बच्चे का अहं एक स्वदेशी अनुक्रम में परिपक्व होता है – “एक नया जीव प्रारम्भिक रूप से अपरिभाषित अस्तित्व से बाहर विकसित होता है तथा इसमें जीवों के सभी अंगों को एक क्रम से विकसित करने की क्षमता होती है” (हॉल, लिंडजे, लोहेसिन, मानसोवित्ज, 1985, पृष्ठ 76)। एरिकसन ने आठ अवस्थाओं के साथ अहं विकास के एक सिद्धान्त की अवधारणा विकसित की और प्रत्येक अवस्था ने कुछ मूल विशेषताओं को साझा किया। वे निम्नलिखित हैं :

- प्रत्येक अवस्था में एक संक्रान्ति द्वारा चिन्हित होती है – शारीरिक परिपक्वता और समाज, माता-पिता आदि द्वारा रखी गई मांगों के दोनों अन्तः क्रिया के फलस्वरूप व्यक्ति में उत्पन्न होता है।
- संकट का समाधान उस विशेष अवस्था के अहं गुणों से होता है।
- यद्यपि एरिकसन ने विकास के मनोसामाजिक पहलू पर बल दिया, परन्तु प्रत्येक अवस्था में वृद्धि एवं परिवर्तन के मनोलैंगिक एवं मनोसामाजिक पहलुओं के घटक होते हैं।



चित्र 7.6: एरिक्सन संस्थान में एरिक इरिक्सन

स्रोत : www.erikson.edu

तालिका 7.1 : मनोसामाजिक विकास की अवस्थाएँ

अवस्था	द्वंद्व	गुण	अस्तित्वगत प्रश्न
शैशवावस्था	विश्वास बनाम अविश्वास	आशा	क्या मैं संसार पर भरोसा कर सकता हूँ?
प्रारम्भिक बाल्यावस्था	स्वतंत्रता बनाम लज्जाशीलता	इच्छा शक्ति	क्या मेरा होना ठीक है?
खेल अवस्था	पहल बनाम शक्ति दोषिता	उद्देश्य	क्या यह मेरे लिए ठीक है कि मैं चलूँ, अनुकरण और कार्य करूँ?
स्कूल अवस्था	परिश्रम बनाम हीनता	सार्मथ्यता	क्या मेरे लिए इस दुनिया में सफल होना संभव है?
किशोरावस्था	अंह बनाम पहचान भूमिका संभ्राति	कर्तव्यनिष्ठता	मैं कौन हूँ? मैं क्या बन सकता हूँ?
युवा वयस्कावस्था	घनिष्ठता बनाम अलगाव	प्रेम	क्या मैं किसी से प्यार कर सकता हूँ?
वयस्कावस्था	जननात्मकता बनाम स्थिरता	देखभाल	मैं दूसरों को क्या दे सकता हूँ?
वृद्धावस्था	अंह बनाम संपूर्णता निराशा	बुद्धिमता	कुल मिलाकर पूरे जीवन मैंने कैसे जीया है?

एरिकसन का जीवन चक्र शैशवावस्था से शुरू वृद्धावस्था तक होने वाले क्रमिक अहं संकट पर केन्द्रित था। अन्य दूसरी अवस्था पर जाने के लिए व्यक्ति को प्रत्येक संकट (विशिष्ट अवस्था) का सफल समाधान करना आवश्यक पाया गया। मनोसामाजिक विकास की अवस्थाएँ नीचे दिए गयी हैं -

- 1) **विश्वास बनाम अविश्वास (मौखिक)** : जब शिशु को उचित मातृ देखभाल और ध्यान मिलता है तो मूल विश्वास का विकास होता है। परन्तु अपर्याप्त मातृ देखभाल, अस्वीकार या असंगत व्यवहार अविश्वास पैदा करता है और बालक के अन्दर दूसरों के प्रति और संसार के प्रति संदेह एवं डर उत्पन्न हो जाता है। यहाँ केन्द्रीय संकट मूल अविश्वास की तुलना में मूल विश्वास के अनुपात में अधिक विकसित है। इस प्रकार, एक स्वस्थ व्यक्तित्व अविश्वास पर विश्वास के मध्य संतुलन का परिणाम है। इस द्वंद्व का समाधान के होने पर पहला मनोवैज्ञानिक गुण आशा (अपेक्षा) विकसित होता है। धीरे-धीरे शिशु सार्थक आशा पर ध्यान केन्द्रित करना सीखता है और बेकार आशा को त्याग देता है। वह विश्वास करता है कि असफलताएँ अपरिहार्य नहीं होंगी जैसी वह आशा (अपेक्षा) करता है।
- 2) **स्वतंत्रता बनाम लज्जाशीलता (गुदा)** : जैसे-जैसे बालक स्वैच्छिक पेशीय नियन्त्रण प्राप्त करता है, वह दो पेशीय क्रियाओं के साथ प्रयोग प्रारम्भ करता है- पकड़ना एवं छोड़ना। प्रसाधन प्रशिक्षण इस अवस्था का एक अनिवार्य पहलू है और जिस तरह से माता-पिता सम्भालते हैं, उससे बालक में दो अभिवृत्तियों का विकास होता है - माता-पिता की मांग पर उनके खिलाफ शक्तिशाली हाथियार का प्रयोग करना, रोकना या त्याग देना इसके लिए एक आरामदायक प्रक्रिया है (इरिकसन, 1950)। इस प्रकार, इस अवस्था का संकट बच्चे को अपने शरीर के मार्गदर्शन में इच्छानुसार स्वायत्तता प्राप्त करने में असमर्थ होता है, जो उससे अपेक्षित होते हैं, तब लज्जाशीलता उत्पन्न होती है। सत्ताधारी व्यक्तियों से बहुत अधिक लज्जा आ सकती है। जिससे असुरक्षा की भावना विकसित हो सकती है और वही बालकों में इस संकट के समाधान पर इच्छा शक्ति विकसित होती है।
- 3) **पहल शक्ति बनाम दोषिता (लिंग प्रधानावस्था)** : इस आयु (4 वर्ष से 6 वर्ष) तक बालक का सामाजिक वातावरण उसे अधिक सक्रिय बनाता है और पहल करते हुए, उत्पादक होने के साथ-साथ स्वयं को निर्देशित करने और खेलने का निर्देश देकर दूसरों की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। यदि माता-पिता बच्चों को अपने कार्यों को करने की अनुमति नहीं देते हैं या अधिक प्रतिबन्धात्मक या महत्वपूर्ण होने के कारण अतिरिक्त जिम्मेदारी खुद ग्रहण करते हैं, तो बच्चे में अपराध का भाव विकसित हो सकती है। इस द्वंद्व का समाधान उद्देश्य के गुण को विकसित करता है।
- 4) **परिश्रम बनाम हीनता (अव्यक्तावस्था)** : “यह यौवन अवस्था के तूफान से पहले की शांति है।” “इसे सामाजिक रूप से सबसे निर्णायक अवस्था” माना जाता है (इरिकसन, 1963, पृष्ठ 260)। बालक नई सामाजिक मांगों के साथ सामंजस्य स्थापित करना सीखता है जैसे शैक्षिक व्यवस्था एवं संस्कृति के तरीके सीखता है, लेकिन वर्षों से ये मांगे निरन्तर बढ़ रही हैं (सैयद और मैकलीन, 2018)। सफलतापूर्वक विकास सामर्थ्य का विकास करता है, जो “कार्यों के पूरा होने में

निपुणता और बुद्धिमत्ता का प्रयोग है" (इरिक्सन, 1964, पृष्ठ 124), जबकि असफलता से हीनता की भावना उत्पन्न हो सकती है।

- 5) **पहचान बनाम भूमिका विभ्रान्ति** (प्रारम्भिक जननांग) : इस अवस्था तक, किशोर ज्ञान को एकीकृत करने का प्रयास करते हैं जिसे उन्होंने व्यक्तिगत पहचान में एकत्रित किया था। ये औपचारिक वर्ष व्यक्तित्व पहचान और स्वयं की भावना के लिए उनकी खोज में विश्वास, लक्ष्यों और मूल्यों की गहन खोज के लिए एक मंच है। एक स्वस्थ अहं पहचान तभी विकसित हो सकती है जब अन्य पिछली पहचान स्वीकृत हो। प्रारम्भिक अवस्था (विश्वास बनाम अविश्वास) शारीरिक पहचान के लिए जाने जाते थे और बाद वाले (परिश्रम बनाम हीनता) सामाजिक भूमिकाओं द्वारा निर्देशित थे। बाल्यावस्था एवं वयस्कावस्था के मध्य की खाई को पाटने के लिए इन शारीरिक और सामाजिक पहचानों को इकट्ठा होने की आवश्यकता है। अहं की पहचान के विकास में विफलता से आत्म-भ्रम और भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। उदाहरण के लिए, व्यवसाय या उच्च शिक्षा के चुनाव में अक्षमता (हैजले एवं छिल्लर, 1981)। सफल द्वंद्व समाधान से इस अवस्था में कर्तव्यनिष्ठता की उत्पत्ति होती है - ऐसी व्यक्तिगत योग्यता जो समाज के नैतिक मूल्यों एवं मानकों को ध्यान में रखते हुए व्यवहार करते हैं।
- 6) **घनिष्ठता बनाम अलगाव** (जननांग) : वह अवस्था जहाँ व्यक्ति व्यक्तिगत सम्बन्धों के खोजने के लिए तैयार होते हैं और घनिष्ठ सम्बन्ध बनाने की इच्छा से प्रेरित रहते हैं। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि इरिक्सन के अनुसार, घनिष्ठता की एक सच्ची भावना उन लोगों में उत्पन्न होती है जिन्होंने व्यक्तिगत पहचान की भावना विकसित की है। उपयुक्त सम्बन्ध बनाने में विफलता का परिणाम अलगाव, अकेलापन और खालीपन भी हो सकता है— ऐसे लोग भावनात्मक रूप से अलग-थलग होते हैं और संबंधों के प्रति कम प्रतिबद्ध होते हैं। इरिक्सन के अनुसार, इस अवस्था की सफलतापूर्वक समाधान से प्रेम जैसी योग्यता विकसित होकर पारस्परिक संबंध अधिक अर्थपूर्ण एवं स्थायी होने लगते हैं।
- 7) **जननात्मकता बनाम स्थिरता** : मध्य व्यस्कावस्था के दौरान, दीर्घायु की आवश्यकता का प्रदर्शन किया जाता है। इसमें बालकों के जीवन में निरन्तरता और उन पर लगा अन्य प्रभाव शामिल है। जननात्मकता का तात्पर्य व्यक्ति द्वारा अपने अगली पीढ़ी के लोगों के कल्याण तथा साथ ही साथ समाज के कल्याण के लिए है, जिसमें वे लोग रहेंगे जो कि चिंता से है। इस प्रकार समाज के लिए अधिक उत्पादक और महत्वपूर्ण होने के तरीकों की खोज है। उदारता के विकास में विफलता से स्थिरता हो सकती है जो आत्म-तल्लीनता और केवल व्यक्तिगत देखभाल है। इस अवस्था में द्वंद्व का एक संतोषजनक समाधान तथा देखभाल जैसे गुण विकसित करता है जो दूसरों की देखभाल करने और उन्हें सिखाने में मदद करता है।
- 8) **अहं संपूर्णता बनाम निराशा** : यह अवस्था प्रतिबिम्ब द्वारा चिन्हित है। इस अवस्था में व्यक्ति धीमा हो जाता है एवं जीवन में अपनी उपलब्धियों की समीक्षा करता है। हमारे लक्ष्यों को प्राप्त करने पर एकरूपता, पूर्णता और अखण्डता की भावना उत्पन्न करती है, हालांकि असफलता को निराशा के रूप में अनुभव किया जाता है। यह हमारे द्वारा किए गये कार्यों और गलतियों के लिए पछतावे के रूप में चिन्हित है। जब समग्रता निराशा को मात देते हैं, तो ज्ञान का गुण विकसित

होता है, जिसका इस अवस्था में द्वंद्वों का समाधान है। यह एक व्यक्ति को शांति और पूर्णता की भावना प्रदान करता है। एरिकसन की प्रणाली को मनोसामाजिक पहलुओं पर बल देने के कारण विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा सराहा गया है, लेकिन यह आत्मनिष्ठ एवं विशुद्ध सैद्धान्तिक रूप से आलोचना का शिकार भी हुआ है। उदाहरण के लिए –आशा, इच्छाशक्ति आदि के विषय में उनके विचार (लुडिन, 1985)।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 3

1) मूल विद्वेष की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) एक व्यक्ति में मूल चिन्ता कैसे विकसित होती है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) हॉर्नी द्वारा प्रतिपादित मूल चिन्ता को कम करने की शैलियों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) मनोलैंगिक अवस्था के विकास में एरिकसन के मनोसामाजिक विकास की कौन सी अवस्था फ्रायड के प्रधानावस्था अवधारणा के समान है?

.....

.....

.....

.....

.....

5) जननात्मकता अवधारणा का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

7.5 हैरी स्टैक सुल्लीवान

शायद सुल्लीवान उन नव फ्रायडवादियों में से हैं जिन्होंने फ्रायड के मनोविश्लेषण से सबसे अधिक विचलन किया जैसे उपाहं पराहं की अवधारणा को छोड़ना, यौन मूल प्रवृत्ति पर बल देना, लेकिन कुछ पर संज्ञान भी लिया जैसे – चिन्ता, अचेतन, रक्षा प्रक्रम, स्वप्न व्याख्या आदि को उन्होंने अपने सिद्धान्त की योजना में शामिल किया। उनकी प्रणाली के *अन्तरवैयक्तिक सिद्धान्त* कहा जाता है और इस तथ्य पर जोर दिया जाता है कि व्यक्तित्व “बार-बार होने वाले अन्तरवैयक्तिक परिस्थितियों का सापेक्ष रूप से टिकाऊ पैटर्न है जो मानव जीवन की विशेषता है” (सुल्लीवान, 1953 पृष्ठ 11)। मनोविज्ञान के क्षेत्र में सुल्लीवान का योगदान नीचे सूचीबद्ध है:

7.5.1 व्यक्तित्व की गतिकी

सुल्लीवान ने मनोविदलता के रोगियों के साथ बड़े स्तर पर काम किया था तथा अस्वीकार्य और चिन्ताजनक स्थितियों को परास्त करने के कारण अपने चरम रूप में अनुभव के असम्बद्ध प्रणालियों के प्रभावों का अवलोकन भी किया था। मनुष्य आमतौर पर आवश्यकताओं के कारण उत्पन्न होने वाले तनाव को कम करता है। यहाँ तनाव को दो भागों में बाँटा गया है – आवश्यकताओं द्वारा उत्पन्न तनाव (कार्यों का एकत्रीकरण), चिन्ता से उत्पन्न तनाव (विघटनकारी व्यवहार)। सुल्लीवान ने व्याख्या की कि चिन्ता माँ से बालक एवं बालक से माँ तक प्रेषित होती है। उदाहरण के लिए, भूख का तनाव शिशु के रोने का कारण बनता है जिससे माँ में तनाव उत्पन्न होता है और बालक की आवश्यकता को पूरा करके संतुष्ट किया जा सकता है। इस प्रकार, आरम्भ से ही चिन्ता एवं तनाव में अन्तरवैयक्तिक सम्बन्ध व्याप्त है।

सुल्लीवान ने अनुभूति अथवा संज्ञान के तीन तरीकों की पहचान की और वे इस प्रकार हैं:

- **प्रोटोटैक्सिक अनुभूति** : एक शिशु के रूप में सरल यथार्थ अनुभूतियाँ करने का अस्पष्ट तरीका है। जैसा कि शिशुओं के संज्ञान की प्राकृतिक अनुभूति होती है, उन्हें एक क्रम या स्थिरता में नहीं रखा जा सकता है। वे एक सी एवं संचारित नहीं होती है।
- **पाराटैक्सिक अनुभूति** : जैसे-जैसे शिशु विकसित होता है, पहले के एक से कम अनुभव होते हैं। हालांकि, वह घटनाओं का तार्किक ढंग से सम्बन्ध नहीं रखता है। वह घटनाओं को कारण-सम्बन्ध के रूप में देखता है क्योंकि वे अस्थायी सम्बन्ध है, जो एक के बाद एक होता है।
- **सिन्टैक्सिक अनुभूति** : तार्किक, युक्तिसंगत और परिपक्व संज्ञानात्मक कार्य ये अर्थपूर्ण अन्तर्वैयक्तिक संचार है।

7.5.2 अन्तर्वैयक्तिक स्थितियों के लिए प्रोटोटाइप आद्यप्ररूप के रूप में पोषण

नव-फ्रायडवादी

शिशु प्रोटोटैक्सिक के रूप में यथार्थ की अनुभूति करते हैं और उनका सबसे महत्वपूर्ण शिशु माता के चूचुक को अपने होठों में पकड़ लेता है। इस दोहराव के अनुभूति (पोषण के) के कारण, शिशु माता के मूल विचार को विकसित करता है, जैसे माता का दुलार (ममता)। शिशु द्वारा महसूस की गई संतुष्टि की सीमा के आधार पर, वह द-निप्पल-इन-द-लिप्स ममता के विभिन्न मानवीकरण विकसित करता है (सुल्लीवान, 1953)।

- i) अच्छा एवं संतोषजनक चूचुक मानवीकरण : एक कोई जो दूध देता है जब वह भूखा है (अच्छी माता)।
- ii) अच्छा परन्तु असंतोषजनक चूचुक मानवीकरण : कोई दूध देता है जबकि वह भूखा भी नहीं है। (अच्छी माता)
- iii) होठों में गलत चूचुक मानवीकरण : जब शिशु भूखा है तब उसे कोई दूध नहीं देता है, इसलिए शिशु बढ़िया चूचुक की तलाश करता है (बुरी माँ)
- iv) बुरा निप्पल मानवीकरण : वह जो चिन्ता एवं तनाव का संचार करता है (बुरी-व्याकुल माता)।

पोषण स्थिति शिशुओं के भविष्य के रिश्तों के लिए एक महत्वपूर्ण आद्य प्ररूप के रूप में कार्य करती है।

7.5.3 आत्म का मानवीकरण

शिशु अन्ततः सीखता है कि शिशु किसी के “निषिद्ध इशारों” के लिए स्वतंत्र नहीं है, जो उसे खुद के कुछ पहलुओं का अनुभव नहीं करने के लिए प्रेरित करता है। वह यह भी खोज करता है कि कुछ व्यवहार शिशु द्वारा महसूस किए गये अन्तर्वैयक्तिक चिन्ता को कम करने में मदद करते हैं और इस परीक्षण और चिन्ता-त्रुटि के माध्यम से वह अन्ततः “मुझे” की अवधारणा को पूरा करता है। सुल्लीवान द्वारा आत्मन् के तीन मानवीकरण की चर्चा की गई :

- i) अच्छा-स्वयं (शिशु व्यवहार जो पुरस्कृत किया गया है, कोमलता एवं गर्मजोशी के साथ प्रशंसा की गई है, किसी के ममता/प्यार) के साथ अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों को संतुष्ट करने का परिणाम।
- ii) बुरा - स्वयं (व्यवहार जो तनाव बढ़ता है और माता उस शिशु में चिन्ता प्रकट करती है जो बुरा-स्वयं में सम्मिलित होता है), और
- iii) स्वयं-नहीं (शायद ही कभी चेतन रूप से अनुभव किया हो और शायद सपनों में अभिव्यक्त पाया गया हो, तीव्र चिन्ता से बाहर विकसित होता है तथा शेष व्यक्तित्व से अलग हो जाता है।

7.5.4 विकासात्मक अवस्थाएँ

सुल्लीवान ने व्यक्तित्व विकास को “शैशवावस्था से लेकर किशोरावस्था तक छः अवस्थाओं में माना है। उन्होंने कहा कि व्यक्तित्व में परिवर्तन किसी भी अवस्था में हो सकता है और शिशु की दूसरों के प्रति धारणा, और प्रतिक्रिया (अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध)

व्यक्तित्व विकास के लिए महत्वपूर्ण है। ये अवस्थाएँ हैं— शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रारम्भिक किशोरावस्था, पूर्व किशोरावस्था और विलंबित किशोरावस्था।

तालिका 7.2 : सुल्लिवान की विकासात्मक अवस्थाएँ

विकासात्मक अवस्थाएँ	कालक्रम	उत्कृष्ट उपलब्धियाँ / असफलताएँ
1) शैशवावस्था	जन्म से भाषा तक (0-18 माह)	यथार्थ, अच्छा-बुरा और स्वयं नहीं का विभेदीकरण, अच्छी/बुरी माँ का मानवीकरण, उदासीनता एवं निद्राजनक अलगाव की रक्षात्मक प्रतिक्रियाएँ।
2) बाल्यावस्था	भाषा प्रयोग से खेलसंगी की आवश्यकता (18 माह से लगभग 5 वर्ष)	यथार्थ का पाराटैक्सिक अनुभव, साथियों के साथ अहंकेन्द्रित सम्बन्ध, भाषा का मधुर प्रयोग, पुरुषवादी परिवर्तन सम्भव, जैसे कि "प्रदर्शन: नाटकीयता एवं पूर्वाग्रह।
3) किशोरावस्था	व्याकरण स्कूल से मित्र की आवश्यकता तक (6 से 8 या 9 वर्ष)	यथार्थ का पाराटैक्सिक एवं सिनटैक्सिक अनुभूति, परिपक्वता एवं सहयोग, स्कूल के अनुभवों में सामाजिक अधीनता एवं सामाजिक सामंजस्य।
4) पूर्व किशोरावस्था	घनिष्ठ मित्रता से यौवनारंभ तक (9 से 12 वर्ष)	यथार्थ का अधिकतर सिनटैक्स अनुभव, समान लिंग के मित्र की लिए आवश्यकता, मित्रों के साथ मजबूत सहयोगिता, अनुभवों का सघन सत्यापन, निस्वार्थ प्रेम के लिए क्षमता की स्थापना।
5) प्रारम्भिक किशोरावस्था	यौवनारंभ से अन्य लिंग के साथी में रुचि तक 13 से 17 या 18 वर्ष)।	यथार्थ का सिनटैक्स अनुभव, काम-वासना की अभिव्यक्ति की आवश्यकता, विपरीत लिंग के साथी की आवश्यकता, वासना एवं सुरक्षा के मध्य टकराव - घनिष्ठता की आवश्यकता।
6 बिलम्बित (देर) किशोरावस्था	विषम लैंगिक गतिविधि से वयस्क अन्तर्व्यक्तिक सम्बन्धों तक (19 या 20 वर्ष से परिपक्वावस्था)।	यथार्थ का सिनटैक्सिक अनुभव, व्यावसायिक पहचान की स्थापना, अतीत के विकास के आधार पर जीवित अनुभवों में प्रतिबंध, वयस्क मित्रता की स्थापना अन्य लिंग के जीवन साथी की आवश्यकता।

स्रोत:

अन्तर्व्यक्तिक संबंध सुल्लिवान प्रणाली का एक मूल सिद्धान्त रहा है और मनोवैज्ञानिकों और व्यक्तित्व सिद्धान्तकारों द्वारा व्यक्तित्व के पूर्ण और व्यवस्थित सिद्धान्तों में से एक के रूप में स्वीकार किया गया (सिंह, 2011)।

फ्रायड के लिए मनुष्य का समाज के साथ सम्बन्ध स्थिर है लेकिन फ्रोम का मानना है कि यह लगातार बदल रहा है। फ्रोम ने फ्रायड के विचारों, सामाजिक सिद्धान्तों और कार्ल मार्क्स के दर्शन को संयुक्त रूप से दर्शाया (*हॉल, लिंडजे, लोहलिन, मानोसेविल्ज, एवं लॉक्स, 1985*)।

7.6.1 स्वतंत्रता से पलायन

फ्रोम की पहली पुस्तक '*स्वतंत्रता से पलायन*' 1941 में प्रकाशित हुई थी और इसका आवश्यक विषय यह था कि आधुनिक समाज में यद्यपि मनुष्य ने स्वतंत्रता एवं आजादी प्राप्त की है, लेकिन वह अकेला एवं असहाय भी है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह प्रकृति एवं अन्य लोगों से अलग है। इससे निपटने का स्वस्थ तरीका अन्य लोगों के साथ जुड़े रहना है। परन्तु जब आजादी एक नकारात्मक स्थिति बन जाती है तब लोग कोशिश कर सकते हैं एवं इससे बच सकते हैं। यह अस्वस्थाकार विकल्प है और कोई भी एक तीन तरीकों से इससे बच सकता है या पलायन कर सकता है :

- सत्तावाद (या तो परपीड़न या पुरुषवादी अधीनता के माध्यम से)
- विध्वंसकता (असहायता एवं अलगाव पैदा करने वाले सामाजिक एजेंट का विनाश)
- स्वचालित अनुरूपता (अनुरूपता दिखाते हुए व्यक्तित्व को त्यागना कि उससे क्या उम्मीद की गई है)।

7.6.2 मूल आवश्यकताएँ

एक व्यक्ति के पास पशु एवं मानवीय दोनों पहलू होते हैं। पशु पहलू शारीरिक आवश्यकताओं के लिए जाना जाता है, जिसन की संतुष्टि आवश्यक होती है। मानव के रूप में, व्यक्ति के पास कारण, कल्पना और सबसे महत्वपूर्ण आत्म-जागरूकता है। मानव अस्तित्व की स्थितियों से उत्पन्न विभिन्न आवश्यकताएँ होती हैं। वे हैं :

- संबद्धता की आवश्यकता** : देखभाल, सम्मान, जिम्मेदारी एवं समझ को सम्मिलित करते हुए लाभकारी प्रेम के माध्यम से अन्य के साथ संबंध बनाने की इच्छा।
- श्रेष्ठता या उत्कृष्टता की आवश्यकता** : व्यक्ति अपनी पशु प्रवृत्ति से ऊपर उठना चाहता है ताकि वह सर्जनात्मक हो सके।
- जड़ता या सुदृढ़ता की आवश्यकता** : व्यक्ति वास्तविक दुनिया से संबंधित होने की आवश्यकता है ताकि वह अपने आप को एक अर्थपूर्ण जीत समझ सके।
- पहचान की आवश्यकता** : मनुष्य के अद्वितीय होने और इस प्रकार दूसरों से भिन्न होने की व्यक्ति की आवश्यकता है।
- उन्मुखता की आवश्यकता** : यह आवश्यकता एक सम्बन्ध का दायरा रखती है, जो व्यक्ति को स्वयं एवं दूसरों को समझने के स्थिर और सुसंगत तरीके प्रदान कर सकती है।



चित्र 7.7 : एरिक फ्रोम
स्रोत :

<https://en.wikipedia.org/wiki/erik-from>

फ्रोम ने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी जिसमें प्रत्येक व्यक्ति स्वयं की पूर्ण भावना विकसित करे और सभी के लिए समान हो। इसे मानवतावादी साम्यवादी समाजवाद कहा जाता था।

7.6.3 व्यक्तित्व के प्रकार

जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है, व्यक्तित्व प्राप्त या अर्जित एवं आनुवंशिक विशेषताओं का योग है। फ्रोम ने स्वभाव को प्रतिक्रिया की एक विद्या के रूप में वर्णित किया है जो आनुवंशिक और अपरिवर्तनीय है। दूसरी और चरित्र सामाजिक प्रभावों के माध्यम से बनता है। यह विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों के साथ-साथ शरीर गठन और चित्त प्रकृति द्वारा निर्धारित किया जाता है। चरित्र और चित्त प्रकृति दोनों को एक साथ उन्मुखीकरण के नाम से जाना जाता है (वॉलमैन, 1979)। विभिन्न प्रकार के व्यक्तित्व सामाजिक कारकों के साथ व्यक्ति के चरित्र को आत्मसात करने और समाज के साथ उसके सम्बन्ध से उत्पन्न होते हैं। वे इस प्रकार हैं :

- i) **ग्रहणशील शैली:** ये ग्रहणशीलकर्ता हैं (प्रेम, भौतिक सम्पदा) और हमेशा दूसरों से सहायता की अपेक्षा करते हैं।
- ii) **जमाखोरी शैली :** (संचय करने की आदत) : बाहरी दुनिया को एक खतरे के रूप में देखते हैं और उनमें सुरक्षा की भावना उनके वस्तुओं के संचयन एवं रखरखाव से आती है।
- iii) **शोषक शैली :** बलपूर्वक चीजों को हासिल करना एवं चतुर होना।
- iv) **विपणन शैली :** खुद को वस्तु के समान समझते हैं उनकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि "वे अपने आपको कितने अच्छे से बेच सकते हैं"।
- v) **उत्पादक शैली :** स्वास्थ्यप्रद प्रकार की बड़ी मात्रा, प्यार से निदेशित देखभाल, रचनात्मकता एवं दूसरों के प्रति जिम्मेदारी।

एक व्यक्ति को सभी पाँच चरित्रों का मिश्रण माना जाता है, फिर भी सम्भावना है कि एक या दो अन्य की तुलना में अधिक प्रमुख हो सकते हैं। सामाजिक एवं सांस्कृतिक ताकतों पर उनके बल के बावजूद भी, फ्रोम के सिद्धान्त की आदर्शवादी एवं अवास्तविक होने के लिए व्यापक रूप से आलोचना की गई है, क्योंकि उनके दृष्टिकोण का समर्थन करने के लिए अनुभवजन्य आँकड़े गायब थे।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 4

- 1) सुल्लीवान द्वारा सुझाए गये अनुभव के तीन प्रणालियों के नाम बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

- 2) इरिक फ्रोम द्वारा चर्चित मानव अस्तित्ववादी मूल आवश्यकताओं का वर्णन कीजिए।

- एडलर ने आगिक हीनता, श्रेष्ठता का प्रयास, जीवन-शैली और जन्म क्रम की अपनी अवधारणाओं के माध्यम से उन्होंने चर्चा की थी कि शिशु का जन्म क्रम उसके व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करता है। उन्होंने चार प्रकार के जन्म क्रम सुझाए थे – प्रथम जन्म, द्वितीय जन्म, छोटा शिशु और एकमात्र शिशु।
- हार्नी ने फ्रायड की कामेच्छा सिद्धान्त – “लिंग ईर्ष्या की अवधारणा पर प्रमुख रूप से असहमति जताई। उन्हें मूल चिन्ता, मनस्तापी आवश्यकताओं, आदर्शित आत्म-प्रतिमा और चिन्ता से निपटने के लिए सहायक द्वंद्व समाधान जैसी अवधारणाओं के लिए जाना जाता है।
- हार्नी ने चर्चा की कि कैसे एक शिशु दुनिया में असहाय और शक्तिहीन महसूस करता है लेकिन अस्तित्व और सुरक्षा के लिए अपनी विद्वेष भावना को दमित करता है। जितना अधिक वह विद्वेष भावना को ढंकता है उतनी ही संभावना है कि वह दूसरों के प्रति अपनी चिन्ता को पेश करेगा।
- एरिकसन एक प्रसिद्ध अहं मनोवैज्ञानिक थे, जिन्होंने फ्रायड के मनोलैंगिक अवस्थाओं में एक मनोसामाजिक आयाम को जोड़ा। उनका सिद्धान्त शैशवावस्था से परिपक्वता या बुढ़ापे तक के जीवनकाल के अवस्था को देखता है। पूरी आठ अवस्थाओं में अहं के गुणों पर बल दिया जाता है, जिन्हें व्यक्तित्व विकास के लिए मूल माना जाता है।
- सुल्लीवान ने अनुभव के तीन तरीकों की पहचान की – प्रोटोटैक्सिक, पाराटैक्सिक एवं सिनटैक्सिक, साथ में आत्मन और निप्पल-इन-द-लिप्स ममता का मानवीकरण। विकासात्मक अवस्थाओं की उनकी अवधारणा ने शैशवावस्था से लेकर विलम्बित किशोरावस्था तक व्यक्तित्व विकास के चरणों का वर्णन किया है।
- फ्रोम अपनी पुस्तक स्वतंत्रता से पलायन और व्यक्तित्व की व्याख्या बहुत से प्रकारों जैसे ग्रहणशील शैली, जमोखोरी शैली, शोषक शैली, विपणन शैली एवं उत्पादक प्रकार के लिए जाने जाते हैं।

7.9 मुख्य शब्द

- एनीमा** : पुरुष में स्त्री आद्यरूप
- एनीमस** : स्त्री में पुरुष आद्यरूप
- आद्यद्यप** : वे हैं मौलिक प्रतिमाएं या प्रतिरूप जो सामूहिक अचेतन में विद्यमान होता है।
- अभिवृत्तियाँ** : युंग के अनुसार व्यापक सामाजिक अभिविन्यास। दो अभिवृत्तियों की पहचान की गई : अन्तर्मुखी एवं बाह्यमुखी (बर्हिमुखी)
- स्वत-अनुरूपता** : किसी की आत्म-अवधारणा को बदलना तथा अपर्याप्तता की भावना पर विजय पाने के लिए सामाजिक मानकों के अनुसार अनुरूपता का प्रदर्शन करना।

- मूल चिन्ता** : धमकी भरी एवं विद्वेष की दुनिया में अलगाव एवं असहायता की भावना।
- सामूहिक अचेतन** : कार्ल युंग द्वारा दी गई एक विवादास्पद अवधारणा जो अचेतन मन का एक हिस्सा है और युगों के माध्यम से सार्वभौमिक अनुभवों को दर्शाती है।
- बहिर्मुखी** : अभिवृत्ति जो बाह्य अभिविन्यास द्वारा चरित्रार्थ है।
- कार्यात्मक अन्तिम लक्ष्य** : वे लक्ष्य या वस्तुएँ जिन्हें हम प्राप्त करने के इच्छुक होते हैं। वे यथार्थता में पूर्णतः मूल नहीं बन सकते परंतु मानव को एक जिम्मेदार व्यक्ति बनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
- जननात्मकता** : समाज के कल्याण के लिए उदारता की चिन्ता और बड़े पैमाने पर समाज के प्रति कितना मूल्यवान एवं उत्पादक हो सकता है।
- आदर्शवादी आत्म** : मूल चिन्ता को कम करने के लिए विकसित आत्म अवास्तविक एवं अतिरंजित भावना।
- वैयक्तिकरण** : पूर्ण व्यक्ति बनने की प्रक्रिया।
- हीनता** : शिशु में विभिन्न कार्यों के सम्बन्ध में अपर्याप्तता की भावना। इस हीनता पर जीत हासिल करना प्रत्येक के लिए एक बड़ा कार्य है।
- अंतर्मुखी** : एक अभिवृत्ति जो आन्तरिकता को वरीयता देने के लिए चरित्रार्थ है।
- अधिकता की क्षतिपूर्ति** : उस क्षेत्र जिसमें वह हीन या उस महान शक्ति का विकास और काबू पाने के प्रयास में शामिल। इस प्रकार उसमें उत्कृष्टता प्राप्त करता है।
- लिंग ईर्ष्या** : फ्रायड ने चर्चा की कि कैसे युवा लड़कियों को उन यौन अंग के कारण पुरुषों से ईर्ष्या होती थी, जो उनके पास थे। फ्रायड ने तर्क दिया कि लड़कियाँ अपनी इस 'वांछित अवस्था' के लिए अपनी माता को जिम्मेदारी ठहराती हैं। हार्नी द्वारा इस अवधारणा की गहन आलोचना की गई है।
- वैयक्तिक अचेतन** : व्यक्ति के व्यक्तिगत अनुभव और चेतना के लिए उपलब्ध न होने के आधार पर भौतिक सामग्री का अचेतन भण्डार।
- जीवन शैली** : अद्वितीय व्यक्तित्व गुण जो जीवन में विशेष उद्देश्यों को पूर्ण करते हैं।
- समक्रमिकता** : ऐसी घटनाओं के रूप में वर्णित किया गया है जिन्हें सामान्य कारण से समझाया नहीं जा सकता है।

7.10 पुनरावलोकन प्रश्न

- 1) युंग के सामूहिक अचेतन एवं आद्य प्रारूपों के विचार का स्पष्टीकरण कीजिए।
- 2) युंग के मनोविज्ञान में चार रूपों एवं दो अभिवृत्तियों को रेखांकित कीजिए।

- 3) हीनता-श्रेष्ठता की अवधारणा की चर्चा कीजिए।
- 4) अनुपालन, विद्वेष और अलगाव प्रकार के बारे में हार्नी के विचार की संक्षिप्त समीक्षा कीजिए।
- 5) फ्रायड द्वारा दी गई मनोलैंगिक अवस्थाओं और एरिकसन द्वारा दी गई मनोसामाजिक विकास की अवस्थाओं के मध्य समानता का चित्रण कीजिए।
- 6) सुल्लीवान के मनोविज्ञान में योगदान को संक्षिप्त रूप से रेखांकित कीजिए। किस प्रकार से इनकी व्यक्तित्व विकास की अवस्थाएं एरिकसन से भिन्न हैं।
- 7) मनोविज्ञान के विकास में एरिक फ्रोम के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।
- 8) कैरेन हार्नी के अन्तर्वैयक्तिक सिद्धान्त के मुख्य पहलुओं को स्पष्ट कीजिए।

7.11 सन्दर्भ एवंपढ़ने के सुझाव

Adler, A. (1907). Study of Organ Inferiority and Its Psychological Compensation, trans. SMITH ELY JELLIFE (New York: Nervous and Mental Disease Publishing Co., 1917), NB p. xiii.

Adler, A. (1908). Adler, Alfred (1908b): The Aggression Drive in Life and in the Neurosis. *The Collected Clinical Works of Alfred Adler*, 2, 1898-1909.

Adler, A. (1927). *Practice and Theory of Individual Psychology*. New York: Harcourt, Brace & World.

Adler, A. (1929). *The Science of Living*. New York, Greenberg.

Ansbacher, H. L., & Ansbacher, R. R. (1956). *The Individual Psychology of Alfred Adler*.

Erikson, E. H. (1950). Growth and Crises of the "healthy personality".

Erikson, E. H. (Ed.). (1963). *Youth: Change and Challenge*. Basic books.

Erikson, E.H. (1964). *Insight and Responsibility*. New York: W.W. Norton.

Freud, S. (1974). Letter from Sigmund Freud to CG Jung, December 6, 1906. In *The Freud/Jung letters: The correspondence between Sigmund Freud and CG Jung*. Princeton: Princeton Univ. Press.

Hall, C. S., Lindzey, G., & Campbell, J. B. (1957). *Theories of Personality* (No. 04; BF698, H3.). New York: Wiley.

Hall, C., Lindzey, G., Loehlin, J. C., Manosevitz, M., & Locke, V. O. (1985). *Introduction to Theories of Personality*. John Wiley & Sons.

Hjelle, L. A., & Ziegler, D. J. (1981). Erik Erikson: a psychosocial theory of personality. *Personality, Basic Theories and Assumptions*

Horney, K. (1937). *The Neurotic Personality of our-Time*. New York, 1937. *Horney The Neurotic Personality of Our Time 1937*.

Horney, K. (1942). *Self Analysis*. New York: WW Norton & Company. Inc., 1942.

Jung, C. G. (1916). *Analytical Psychology*. Moffat, Yard and Company.

Jung, C. G. (1917). The psychology of the unconscious processes. *Collected papers on analytical psychology*, 2. London- Tindall and Cox.

Jung, C. G. (1936). The concept of the collective unconscious. *Collected works*, 9(1), 42.

Jung, C. G. (1953). The personal and the collective (or transpersonal) unconscious. *Two essays on analytical psychology (The collected works of CG Jung, vol. 7, pp. 63–78)*. New York, NY: Pantheon Books. (Original work Published 1945).

Lundin, R.W. (1985). *Theories and Systems of Psychology*. Toronto: D.C. Health and Company.

Monte, C.F. (1995). *Beneath the Mask: An Introduction to Theories of Personality* (5th ed.). Fort Worth: Harcourt Brace College.

Singh, A. K. (2011). *The Comprehensive History of Psychology*. Motilal Banarsidass Publ.

Sullivan, H.S. (1953). *The Interpersonal Theory of Psychiatry*. New York: W.W. Norton.

Syed, M., & McLean, K. C. (2018). Erikson's theory of psychosocial development. In E. Braaten, *The SAGE encyclopedia of intellectual and developmental disorders*. SAGE.

Tarnas, R. (2006). *Cosmos and Psyche: Intimations of a New World View*. New York: Penguin Group.

Wolman, B. B. (1979). *Contemporary Theories and Systems in Psychology*. New York: Harper & row.

7.12 ऑनलाइन संसाधन

- Carl Jung: What are archetypes? <https://www.youtube.com/watch?v=wywUQc-4Opk>
- Face to Face: Carl Gustav Jung (1959) Interview <https://www.youtube.com/watch?v=2AMu-G51yTY>
- Erikson's eight stages of psychosocial development <https://www.youtube.com/watch?v=LvWfct9sHOY>
- The Mike Wallace Interview: Erich Fromm (1958-05-25) <https://www.youtube.com/watch?v=OTu0qJG0NfU>



ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY